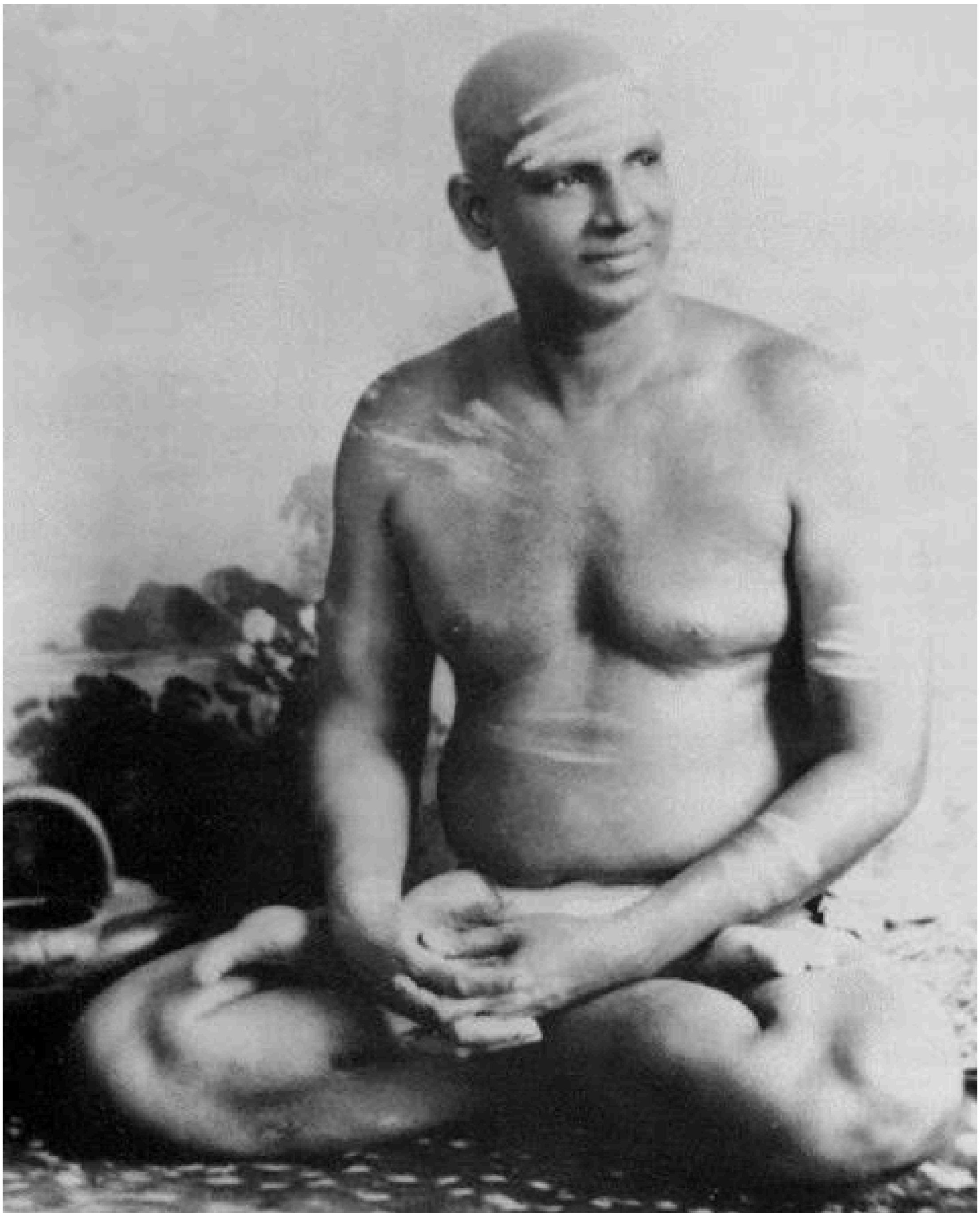
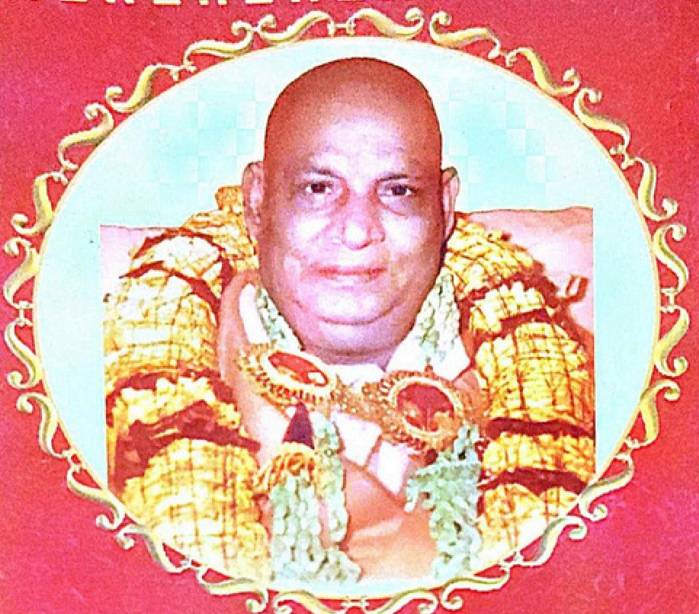




शिवानन्द स्तोत्रपुष्पांजलि

शिवानन्दस्तोत्रपुष्ाांजश

शिवानन्द
स्तोत्रपुष्ांजश

ेखक
श्री स्वामी ज्ञानानन्द सरस्वती

MEDITATE SERVE LOVETHE DIVINE LIFE SOCIETY

अनुवाशिका
स्वामी गुरुवत्स ानन्द माता जी

प्रकिाक

ि शिवाइन ाइफ सोसायटी
पत्राय शिवानन्दनगर - २४९१९२
शज शटहरी-गढ़वा , उत्तराखण्ड (शहमा य), भारत
www.sivanandaonlineorg, www.dlshq.org

प्रथम हिन्दी संस्करण : २०२४

(१,०००प्रशतयाँ)

HO18

PRICE: 55/-

'ि शिवाइन ाइफ सोसायटी, शिवानन्दनगर' के श ए
स्वामी पद्मनाभानन्द द्वारा प्रकाशित तथा उन्ीं ांके द्वारा
'योग-विेान्त फारेस्ट एकिोमी पे्रेस, पो. शिवानन्दनगर,
शज.शटहरीगढ़वाउत्तराखण्ड शपन् २४९१९२ में मुशित ।
For online orders and Catalogue visit: dlsbooks.org

م

समर्पणम्

स्वकीयहृियगतसववशवधभावपररपूर्णं ितसांख्यक िः सुगन्धि-

पद्यकुसुम िः सम ङ्कृतां शिवानन्दस्तोत्रपुष्पांजश -

नामकां कुषिपुस्तकशमिां भन्धिपूर्णवमनसा

ब्रह्मशनष्ठस्य सक जनकल्यार्णकाररर्णिः

परमाराध्यजगिुरोिः

श्रीशिवानन्दयोशगराजस्य

पािकम े स्वाहिाानु -

भवाय तथाऽत्मिुद्धये च

सािरां समपवयाशम

इशत भवताां
शवनयानतिः
श्री ज्ञानानन्द स्वामी

परम श्रद्धेय गुरुिेव श्री स्वामी शिवानन्द जी महाराज
के सांन्यास िीक्षा ितािब्दी महोत्सव के पावन
अवसर पर प्रकाशित

प्रकाशकीय

परम श्रद्धेय गुरुदेव श्री स्वामी शिवानन्दजी महाराज के संन्यास-दीक्षा शताब्दी महोत्सव के पावन अवसर पर, हम अत्यन्त हर्षपूर्वक 'शिवानन्द स्तोत्रपुष्पांजलि' नामक यह पुस्तिका प्रकाशित कर रहे हैं। इस पुस्तिका में संकलित सौ श्लोक वस्तुतः श्रद्धेय गुरुदेव के पावन चरणकमलों में पुष्पांजलि-स्वरूप ही हैं। इसका प्रत्येक श्लोक एक सुरभित पुष्प है जो श्री गुरुदेव के प्रिय शिष्य श्री स्वामी ज्ञानानन्दजी द्वारा उनके चरणारविन्द में अत्यन्त श्रद्धा एवं भक्तिपूर्वक अर्पित किया गया है। यह पुस्तिका गुरु-आराधना का साकार रूप है। अतः यह समस्त साधकों और विशेषतया सद्गुरुदेव श्री स्वामी शिवानन्दजी महाराज के शिष्यों एवं भक्तों के लिए अत्यन्त मूल्यवान है।

प्रेरणाप्रद एवं भक्तिभावपूर्ण श्लोकों से युक्त, यह पुस्तिका दैनिक स्वाध्याय के लिए तथा पूजा-ध्यान के समय वाचन के लिए सर्वाधिक उपयुक्त है। हमें पूर्ण विश्वास है कि यह आपके लिए तथा आपके समान अन्य असंख्य साधकों-भक्तों के लिए अत्यधिक प्रेरणादायी एवं लाभप्रद होगी।

द हिवाइन लाइफ सोसायटी

प्रस्तावना

एक सचे्चे एवां धमवशनष्ठ शहन्िू का जीवन पूजा-आराधना के भाव से पररव्याप्त होता ह। इस उच्च भाव में पे्रम एवां कृतज्ञता की भावना समाशहत होती ह। कृतज्ञता एक ऐसी उिात्त एवां शे्रष्ठ भावना ह जो मनुष्य के हृिय में सहज ही सुफुररत जाग्रत होती ह। कृतज्ञता की यह भावना गहन श्रद्धा, पे्रम, समपवर्ण, दृढ़ शनष्ठा एवां सतत सुतुशत के रूप में अशभव्यि होती ह। सच्ची भन्धि एवां असीम कृतज्ञता से यिु हृिय, अपने इन उच्च भावो ांकी अशभव्यन्धि के श ए अत्यन्त उत्कन्धित होता ह; उसकी प्रब उत्किा का वर्णवन कौन कर सकता ह? केव वही मनुष्य उस उत्किा को जान सकता ह, उसका वर्णवन कर सकता ह शजसने अपने हृिय की गहराइयो ांमें इसे स्वयां अनुभव शकया ह। इस जगत् में, मनुष्य को यशि शकसी अन्य मनुष्य से कुछ प्राप्त होता ह, तो वह उसके प्रशत कृतज्ञता अनुभव करता ह। जब मनुष्य सांसार की भौशतक वसुतुओ–ांउपहारो,ां तथा आवश्यकता के समय सहायता प्राप्त होने पर कृतज्ञता के भाव से भर जाता ह यद्यशप जगत् की ये वसुतुएँ-उपहार तथा सहायता आशि सीशमत एवां अस्थायी होते हैं; तो एक साधक-भि अपने सि्गुरु से प्राप्त आध्यान्धत्मक सहायता, शिव्य ज्ञान एवां कृपा रूपी उपहारो ांके प्रशत शकतना अशधक कृतज्ञ अनुभव करेगा? सि्गुरु उसे िाश्वत आध्यान्धत्मक आनन्द का उपहार प्रिान करते हैं। वे अमृतत्व एवां अनन्त आनन्दमय अवस्था की प्रान्धप्त हेतु उसका मागिवशवन करते हैं। इस प्रकार शिष्य, िाश्वत कृतज्ञता एवां असीम पे्रम के मधुर सूत्र द्वारा अपने सि्गुरु से जुड़ जाता ह।

सि्गुरु की कृपा से ही बद्ध जीवात्मा मुन्धि प्राप्त करती ह। भारत में गुरु-शिष्य के मध्य अि्भुत एवां अशद्वतीय सम्बि का यही रहस्य ह। यह आध्यान्धत्मक सम्बि अत्यन्त अनूठा होता ह तथा शिष्य द्वारा गुरु में पररपूर्णव शिव्यता का िि्वन ही इस सम्बि का सारतत्त्व ह।

अपने गुरु को भगवान् मानना, आध्यान्धत्मक जीवन का सवावशधक महत्त्वपूर्णव तत्त्व ह। गुरु एवां भगवान् में शकशित् भी भेि नही ांकरना, सचे्चे शिष्यत्व हेतु एवां आध्यान्धत्मक शवकास हेतु अशनवायव आवश्यकता ह। श्वेताश्वतर उपशनरि् घोशर्त करता ह-

यस्य देवे र्रा भक्ति यथा देवे तथा गुरौ।
तस्ैयैते कहथता ह्यथापाः प्रकाशन्ेते मित्मनाः ।।

शजस मनुष्य की भगवान् के प्रशत परम भन्धि ह , तथा इस प्रकार की उच्च कोशट की भन्धि अपने गुरु के प्रशत भी ह; ऐसे महापुरुर् के समक्ष, समस्त िास्त्ो ांके शिव्य गूढ़ सत्यो ांका वास्तशवक अथव स्वयमेव उ्घाशटत हो जाता ह । (अध्याय ६-श्लोक २३)

इसी प्रकार, यह भी कहा जाता ह शक गुरु का स्वरूप ध्यान का शवर्य ह , उनके चरर्णकम पूजनीय-आराधनीय हैं, उनके वचन िास्त्–ांसद्ग्रन्ो ांके वचनो ांके समान पावन हैं तथा उनकी कृपा ही मोक्ष का हेतु ह । इसश ए गुरु-पूजा भी योग-साधना का एक अांग ह । भगवि्-आराधना एवां भगवि्-सुतुशत के समान ही गुरु-आराधना एवां गुरु-सुतुशत की जाती ह , क्ोशांक शिष्य के श ए गुरु स्वयां भगवान् ही हैं। यह एक ऐसा आध्यान्धत्मक-अभ्यास ह जो शिष्य के गुरु के साथ सम्बि को िसि करता ह , गुरु-कृपा की वृशि का हेतु बनता ह तथा शिष्य में आध्यान्धत्मक चेतना को जाग्रत करता ह ।

यह सुन्दर ितश्लोकी पुन्धस्तका 'शिवानन्दस्तोत्रपुष्ांजश ि:' एक शिष्य के अपने गुरु के प्रशत आराधना एवां कृतज्ञता के भाव की ही अशभव्यन्धि ह । ये सौ श्लोक परम शवद्वान् ेखक श्री स्वामी ज्ञानानन्द सरस्वतीजी महाराज द्वारा, सि्गुरुिव श्री स्वामी शिवानन्दजी महाराज के पावन चरर्णकम ो ांमें आराधना एवां सुतुशत-स्वरूप अशपवत शकए गए हैं। एक परम्पराशनष्ठ एवां धमवशनष्ठ पररवार में जन्म ेने के कारर्ण, श्री स्वामी ज्ञानानन्दजी हमारी सांसूकृशत की महान् परम्परागत शवद्याओ ांमें पूर्णवतिः िीशक्षत हैं; वे न केव अत्यन्त धाशमवक प्रवृशत्त के हैं, अशपतु भारतीय सांसूकृशत के महान् िाशों के प्रशत गहन श्रद्धा से भी यिु हैं। सांसूकृत भार्ा के प्रशत उनका प्ेरम तथा इस िेवभार्ा में उनकी प्रवीर्णता, िोनो ांही उच्च कोशट के हैं। इसके साथ ही साथ, उनके हृिय में जीवन के आध्यान्धत्मक क्ष्य की प्रान्धप्त की भी गहन उत्का ह, और यही उन्ें सि्गुरुिव के पावन चरर्णो ांमें तथा पशततपावनी माँ गांगा के तट पर न्धस्थत उनके पशवत्र धाम में े आयी ह । शजस क्षर्ण उन्ें श्री गुरुिव का िि्िवन एवां साशिध्य प्राप्त हुआ, उसी क्षर्ण से उन्ोनें स्वयां को श्री गुरुिव के चरर्णो ांमें पूर्णव समशपवत कर शिया ह । वे गुरुिव के ज्ञान-यज्ञ रूपी उच्च आध्यान्धत्मक शमिन हेतु अत्यन्त उत्साह एवां समपवर्ण भाव से शनरन्तर कायविी हैं।

श्री स्वामी ज्ञानानन्द सरस्वतीजी में हमें सचे्चे शिष्यत्व के एक उज्ज्व उिाहरर्ण के ििवन होते हैं। वे ऐसे सत्-शिष्य हैं जो अपने गुरु के शमिन की सेवा में अहशनवि सां ग्न हैं। अपने गुरु के महान् आध्यान्धत्मक कायव की प्रगशत हेतु अपनी सेवाएँ अशपवत करने के अशतररि, वे अन्य कुछ नही ांजानते हैं। वे शवश्राम भी नही ांकरना चाहते हैं। वे कहते हैं, "सि्गुरुिव श्री स्वामी शिवानन्दजी महाराज का साशिध्य पाकर मेरा जीवन धन्य हो गया ह । आनन्द-कुटीर ही मेरा स्वगव ह। अत्यन्त कृपापूववक अपनी िरर्ण में ेकर, श्री गुरुिव ने मुझे सवोच्च आिीवावि प्रिान शकया ह । उन्ोनें मेरे जीवन को आध्यान्धत्मक प्रकाि से आ ोशकत शकया ह । उनके पावन चरर्णकम ो ांमें ही, मेरा परम धाम ह; मेरा मोक्ष एवां कवल्य-साम्राज्य ह । उनकी सेवा ही मेरा ध्यान ह । मेरे गुरुिव की जय हो, जो मेरे श ए भगवान् शिव के साक्षात् स्वरूप हैं।"

श्री गुरुिव के प्रशत उनकी यह परम श्रद्धा एवां भन्धि, अनेकानेक बार शवशभि सुन्दर श्लोको ांमें व्यि हुई ह। इस पुन्धस्तका के श्लोक भी स्वामी ज्ञानानन्दजी की अशद्वतीय गुरु-भन्धि एवां प्ेरम की सहज अशभव्यन्धि ही हैं; ये

श्लोक ऐसे सुन्दर पुष् हैं शजन्हें वे अत्यन्त प्रेेमपूववक श्री गुरुिेव के चरर्णकम ो ांमें अशपवत करते हैं। इस पुन्धस्तका में सांकश त श्लोक समस्त साधक-भि वृन्द के श ए अमूल्य शनशध हैं। ये ि शनक साधना हेतु भी अत्यन्त उपयोगी हैं, क्ोशांक इनमें गुरु-भन्धि एवां सच्चे शिष्यत्व का सारतत्त्व समाशहत ह । ये श्लोक एक ऐसे सच्चे शिष्य एवां साधक के शिव्य भावो ांसे पररपूररत हैं, जो अपने गुरु की कृपा प्राप्त करने हेतु तीव्र आकाांक्षा करता ह, शजससे शक वह भव-बिन से मुि हो सके। इन श्लोको ांका शनयशमत वाचन-स्वाध्याय, आध्यान्धत्मक पथ के पशथको ांके श ए शनिःसन्देह अत्यन्त ाभप्रि होगा। ये श्लोक गहन भन्धि-भाव से ओतप्रोत हैं। ये हमें रोमाांशचत एवां प्रेेररत करते हैं, हमें उिात्त करते हैं। ये हमारे भीतर प्राथवना एवां आराधना का भाव जाग्रत करते हैं। इस पुन्धस्तका को समस्त साधको ांके पूजा-स्थान एवां ध्यान-स्थान के समीप अवश्य स्थान शिया जाना चाशहए। इन श्लोको ांके माध्यम से, श्री स्वामी ज्ञानानन्दजी ने साधक-जगत् को अपनी महती सेवा प्रिान की ह । वे हाशिवक अशभनन्दन के पात्र हैं। "ि योग-वेिान्त फॉरेस्ट यूशनवशसवटी वीक ी" में क्रशमक रूप में प्रकाशित इन श्लोको ांने समस्त साधक-पाठक वृन्द का हृिय पह े ही जीत श या ह । मेरी िुभकामना ह शक इस घु पुन्धस्तका 'शिवानन्दस्तोत्रपुष्पांजश ' का प्रेेमपूववक अशभग्रहर्ण तथा व्यापक प्रसार हो; और वस्तुतिः यह इस योग्य भी ह ।

मेरी परमशपता परमात्मा से प्राथवना ह शक वे इस पुन्धस्तका के सुयोग्य ेखक पर अपने शिव्य अनुग्रह एवां आिीवावि की शवपु वृशि करें।

हशवानन्दनगर १.५.१९५६ **स्वामी हिदानन्द**

प्राक्कथन

सांसृकृत को िेवभार्ा कहा जाता ह। यह अशभव्यन्धि के शवशवध माध्यमो ांमें सवावशधक िुद्ध-पशवत्र माध्यम ह। इसके िब्दो ांका, उनके मू धातुरूप में, वास्तशवक अथव शनशहत होता ह। सांसृकृत एक गौरवमयी भार्ा ह। यह

अत्यन्त मधुर एवां गररमामयी भार्ा ह । भारत की अन्य भार्ाओ ांने सांसूकृत के िब्द-भण्डार से ही मुख्यतिः अपने ब्दि श ए हैं। सांसूकृत एक सुनम्य अथावत् ची ी भार्ा भी ह ।

सांसूकृत भार्ा के साथ पावनता का भाव जुड़ा हुआ ह । सांसूकृत का अध्ययन व्यन्धि के हृिय में एक उच्च कोशट के भाव को, भन्धि-भाव को जाग्रत करता ह । प्रारम्भ में सांसूकृत भार्ा का प्रयोग केव धाशमवक साशहत्य के श ए ही शकया जाता था। परन्तु, बि में इसे अन्य ि शक्षक शवर्यो ांहेतु भी प्रयोग शकया जाने गा। एक समय ऐसा भी था जब सांसूकृत भारतीयो ांके सामान्य वाताव ाप की भार्ा थी। भारत के पूववका ीन राजा सांसूकृत कशवयो ांको प्रोत्साशहत-सम्माशनत करते थे और उस समय सांसूकृत भार्ा अत्यन्त उत्कर्व पर थी। िुभावग्यविात्, आज ोग सांसूकृत को एक मृत भार्ा मानने गे हैं। नही,ां यह सत्य नही ांह । सांसूकृत भार्ा मृत नही ांहो सकती ह । भारतीयो ांके हृियो ांमें सांसूकृत अभी भी स्पन्धन्दत होती ह । एक भारतीय का सांसूकृत भार्ा के प्रशत प्ेरम कभी समाप्त नही ांहो सकता ह ।

इतना ही नही,ां पशिम के भी अनेक महान् शवद्वान्, सांसूकृत भार्ा की मशहमा एवां महानता के प्रशत आकशर्वत हुए हैं। सांसूकृत भार्ा में िोध कायव हेतु, पिाात्य िेिो ांके शवशभि शवश्वशवद्या यो ांमें शवशेर् शवभाग स्थाशपत शकए गए हैं। आज सांसूकृत भार्ा में नवीन िोध की, इसके व्यावहाररक जीवन में प्रयोग की तथा इसे भारत की सामान्य भार्ा बनाने की महती आवश्यकता ह ।

सांसूकृत भार्ा के प्रकाण्ड शवद्वान्, श्री स्वामी ज्ञानानन्दजी महाराज, मनोहारी श्लोको ांरूपी पुष्ो ांसे बने इस पुष्गुच्छ 'शिवानन्दस्तोत्रपुष्ांजश ' को सुधी पाठको ांके समक्ष प्रसुतुत कर रहे हैं; इन श्लोको ांमें सांसूकृत भार्ा के सौन्दयव एवां एक भि के हृिय के शिव्य भावो ांका समन्वय परर शक्षत होता ह । उन्ोनें अपनी इस रचना को अत्यशधक आनन्दप्रि बनाने तथा भारत की युवा पीढ़ी को सांसूकृत भार्ा की मनोहाररता-श्ेरेष्ठता से रोमाांशचत करने का शवशेर् प्रयास शकया ह । श्री स्वामीजी ने सांसूकृत भार्ा का एक मृत भार्ा के रूप में नही,ां अशपतु एक पूर्णवतिः जीवन्त भार्ा के रूप में प्रयोग शकया ह , जो शवद्वज्जनो ांद्वारा श्लाघनीय ह । वे इसका अत्यन्त यथाथव एवां व्यावहाररक रूप में प्रयोग करते हैं। उनके ये श्लोक, सांसूकृत भार्ा के िब्दो,ां ि ी एवां शवशवध छन्दो ांपर उनके स्वाशमत्व की सहज अशभव्यन्धि हैं।

श्री स्वामी ज्ञानानन्दजी, सर सरस ि ी एवां सुन्दर िब्दाव ी-युि काव्य रचना के कारर्ण, समस्त सांसूकृत-प्ेरेशमयो ांके श ए अत्यन्त सम्मान्य शवद्वान् हैं। इन श्लोको ांसे यह स्पि होता ह शक वे सांसूकृत काव्य-रचना के श ए आवश्यक समस्त योग्यताओ ांसे सुसम्पि हैं। सांसूकृत भार्ा के शवद्याथीवृन्द, स्वामीजी की प्ेरेरक-आकर्वक एवां सुन्दर रचनाओ ांके श ए सि व उनके प्रशत कृतज्ञ रहेंगे। मैं स्वामीजी के सभी सप्रयासो ांमें पररपूर्णव सफ ता की मांग कामना करता हाँ।

हशवानन्दनगर २५.४.१९५६ **स्वामी कृष्णानन्द**

शिवानन्दस्तोत्रपुष्ांजश

शिवानन्दस्तोत्रपुष्ांजश

जयतु जगदुर्‌ास्यो जीहवकारुण्यराहश-
नपयहवनयहववेकैाः द्योतमानान्तरंगााः
हनयमयमर्हवत्रो हदव्यतेजोहवलासााः
प्रयतभहवकशीलााः श्रीहशवानन्दद्योगी ।।१।।

महान् योगी गुरुिव श्री स्वामी शिवानन्द जी महाराज की सिव जय हो जो शवश्ववन्दनीय हैं, समस्त प्राशर्णयो ां के प्रशत करुर्णावान् हैं; शजनका हृिय शवनय, शववेक एवां कोम ता से युि ह , शजनका मन यम-शनयम से अत्यन्त पशवत्र ह, जो शिव्य प्रकिा से शवभाशसत हैं तथा सिव शवश्व-कल्यार्ण हेतु प्रयत्निी हैं।

नमसे्‌ते गुरुदेवाय नमसे्‌ते रुण्यमूतपये ।
नमसे्‌ते श्रीहशवानन्दमुनीन्द्राय मित्मने ।।२।।

सिाचाररता के मूशतवमन्त रूप एवां समस्त महान् ऋशर्यो ांमें अग्रगण्य गुरुिेव श्री स्वामी शिवानन्द जी महाराज को मेरा बारम्बार प्रर्णाम ह।

करुणावरुणागारं तरुणारुणतेजसम् ।
शरणागतमन्दारं हशवानन्ं दं गुरुं भजे ।।३।।

मैं गुरुिेव श्री स्वामी शिवानन्द जी महाराज की सि व आराधना करता हाँ जो करुर्णाशसिु हैं, उियमान सूयव सदृ िीप्यमान हैं तथा जो अपने िरर्णागत जनो ांके श ए कल्पवृक्ष-सम हैं।

अत्यन्तहनमपलात्मानं प्रत्यग्रप्रहतभाक्तितम्।
शुरुत्यन्तबोधवाराहशं हशवानन्ं दं गुरुं भजे ।।४।।

मैं गुरुिेव श्री स्वामी शिवानन्द जी महाराज की वन्दना करता हाँ शजनका मन अत्यन्त पशवत्र ह , शजनकी बुन्धद्ध अतीव िुिाग्र ह तथा जो वेिान्त-ज्ञान के सागर हैं।

सवपलोकसमाराध्ं यं शवपहनलीनमानसम् ।
शवपरीशाननं वन्ेदे हशवानन्ं दं मिामुहनम् ।।५।।

जो समस्त शवश्व द्वारा वन्धन्दत हैं, शजनका मन सि व भगवान् शिव में ीन ह तथा शजनका मुख पूर्णवचन्द्र सम शवभाशसत ह, उन महान् सन्त श्री स्वामी शिवानन्द जी महाराज की मैं आराधना करता हाँ।

वीतान्तसंसारगदाहदपतानां
वेदान्तबोधौषधदानदीक्षम्
वन्दारुमन्दारममन्दकीहतप
वन्ेदे हशवानन्दमिामुनीन्द्रम् ।।६।।

मैं महामुनीन्द्र श्री स्वामी शिवानन्द जी महाराज को सािाांग प्रशर्णपात करता हाँ जो भवरोग से पीशड़त मनुष्यो ां को वेिान्त-ज्ञान रूपी औशर्ध प्रिान करने में सतत सां ग्न हैं, जो अपने प्रर्णत-जनो ांके श ए शिव्य कल्पवृक्ष हैं तथा शजनका उज्ज्व यि समस्त शवश्व में व्याप्त ह।

मन्दाहकनीतीरकुटीरवासं
मन्ेदतरानन्दकरं जनानाम्
वन्द्याकृहतं वण्यपगुणामुबुराहशं
वन्ेदे हशवानन्दमिामुनीन्द्रम्।।७।।

मैं महान् सन्त श्री स्वामी शिवानन्द जी महाराज की वन्दना करता हाँ जो गांगा निी के तट पर न्धस्थत एक कुटीर में शनवास करते हैं, जो समस्त मनुष्यो ांको अत्यशधक आनन्द प्रिान करते हैं, जो श्लाघनीय गुर्णो ांके सागर हैं तथा शजनके शिव्य रूप की भिवृन्द अचवना करते हैं।

हिदानन्दरूरं् सदा हिन्तयन्ं तं
मुदाधारमोंकारमेवोच्चरन्तम्
भवाम्भोहधमग्नान् जनानुद्धरन्ं तं

हशवानन्दयोगीन्द्रमेवाश्रयेऽमि् ।।८।।

मैं महामुनीन्द्र श्री स्वामी शिवानन्द जी महाराज का िरर्णापि हाँ जो सिव परमात्म-तत्त्व का ध्यान करते हैं, शनरन्तर प्रर्णव का उच्चारर्ण करते हैं, आनन्द के स्रोत हैं तथा जो भवसागर में शनमन जनो ंके उद्धारकताव हैं।

ओि भाग्यमुत्कृष्टवेदान्ततत्त्वा-
न्योिरात्रमस्मान् समुद्बोधयन्तम्
नवामन्दैितन्यमुद्दीर्यन्तं
हशवानन्दयोगीन्द्रमेवाश्रयेऽमि् ।।९।।

अहो! हम सबका परम सौभाग्य ह शक हम महान् योगी श्री स्वामी शिवानन्द जी महाराज के चरर्णाशश्रत हैं जो सि व हमें विान्त-तत्त्व का ज्ञान प्रिान करते हैं तथा हममें नवीन ऊजाव एवां उत्साह का सांचार करते हैं।

संसाराम्भोहनहधहनर्हततान् तत्तटं प्रार्यन्तं
कंसाराहतं कलुषशमनं सन्ततं हिन्तयन्तम्
तं सारान्ताःकरणममलं श्रीहशवानन्दमूहतप
रुंसां श्रेष्ठं रुरुगुणहनहधं रुष्टरुण्यं भजेऽमि् ।।१०।।

मैं महान् सन्त श्री स्वामी शिवानन्द जी महाराज की वन्दना करता हाँ शजनका हृिय अतीव शविा एवां पशवत्र ह, जो भवसागर में शनमग्न जनो ंके उद्धार हेतु सतत सां ग्न हैं, जो सि व सववपापहताव भगवान् कृष्ण का ध्यान करते हैं, जो सभी मनुष्यो ंमें श्रेष्ठ हैं, समस्त गुर्णो ंके धाम हैं तथा सिाचार के मूशतवमन्त रूप हैं।

हनत्यानन्दं हनरुर्मतमं हनत्यमालोकभाजां
प्रत्यग्रार्द्प प्रकटसुखदाभाषणैवपधपयन्तम्
प्रत्यक्षोद्यहद्दनमहणहनभं श्रीहशवानन्दमूहतप
शुरुत्यन्तज्ञं शुरुहतसुखर्दं भावये हवश्ववन्द्यम् ।।११।।

जो सिव अपनी मधुर एवां कृपापूर्णव वार्णी से भिो ंको आनन्द प्रिान करते हैं, जो उियमान सूयव सम तेजस्वी हैं, विान्तिि-वन में शनष्णात हैं, सि्गुर्णो ंके भण्डार हैं, उन शवश्ववन्धन्दत महान् सन्त श्री स्वामी शिवानन्द जी महाराज की मैं आराधना करता हाँ।

नमाः र्मकारुण्यशाहलने हदव्यमूतपये ।
हशवानन्दमुनीन्द्राय लौकेकगुरवे नमाः ।।१२।।

मैं महामुनीन्द्र शवश्वगुरु श्री स्वामी शिवानन्द जी महाराज को बारम्बार प्रर्णाम करता हाँ शजनकी करुर्णा असीम ह तथा जो शिव्यता के मूशतवमन्त रूप हैं।

अस्मत्परमभाग्यैकफलाहयतहवलोकनम्।
गुरुदेवं हशवानन्दमुहनवयपमुरास्मै ।।१३।।

हम गुरुिव श्री स्वामी शिवानन्द जी महाराज की वन्दना करते हैं। अपने परम सौभाग्य के फ स्वरूप ही हम उनका ििवन प्राप्त कर रहे हैं।

सवपजं्ञं सततं समस्तहवबुधशे्रेणीसमाराहधतं
भूतव्रातहितं हगरीन्द्रहनलयं संगीतलास्यहप्रयम्
गंगासिमनस्कमुत्कटतरो्हनष्ठं हशवानन्दस -
द्योगीनं्द्रं महतमन्तमीश्वरसमं वने्दे जगदे्देहशकम् ।।१४।।

मैं महान् सन्त श्री स्वामी शिवानन्द जी महाराज की आराधना करता हाँ जो भगवान् शिव के समान सिव तपस्या में ीन हैं, समस्त शवद्वत्-जनो ांके आराध्य हैं, सववज्ञ हैं, शहमा य में वास करते हैं तथा माँ गांगा के प्रशत अत्यशधक अनुरि हैं, सांगीत एवां नृत्य शजनें् शप्रय ह तथा जो समस्त प्राशर्णयो ांके प्रशत समभाव रखते हैं।

उतु्फुल्लामु्बुजकोमलाननगलत्कारुण्यमन्दक्तस्मतं
कल्पानोकिकल्पमाहश्रतजनप्रोद्यतृ्कर्ाकन्दलम्
अल्पान्योत्तमसद्गु्णैकहनलयं हदवं्यं हशवानन्दस-
द्योगीनं्द्रं भवहसनु्धुमन्नशरणं वने्दे मताहध

जो भवसागर में शनमग्न जनो ांके एकमात्र आश्रय हैं, सि्गुर्णो ांके भण्डार हैं, जो अपने भिो ांको कल्पवृक्ष सदृ समस्त इन्धच्छत वसु्तुएँ प्रिान करते हैं, शजनके सुपुन्धष्त कम के समान मनोहारी मुख पर सि व करुर्णापूर्णव मुस्कान नृत्य करती ह, उन शिव्य योगीन्द्र श्री स्वामी शिवानन्द जी महाराज की मैं वन्दना करता हाँ।

याः प्रत्यग्रहवहशष्टतत्त्वभररतं हदव्योर्देशामृतं
लोकेभ्यस्सततं ददाहत दुररतं हनशे्शेषमुनूमूलयन्
हनत्यानन्दर्दावबोधनरहतं मते्र्येषु संवद्धपयन्
सुतुत्यिोत्र हवभाहत सन्मतहशवानन्दाय तसै्मै नमाः ।।१६।।

जो श्लाघनीय गुर्णो ांके सागर हैं, जो मनुष्यो ांमें िाश्वत आनन्द की प्रान्धप्त हेतु तीव्र आकाांक्षा उत्पि करते हैं तथा शजनके परम सत्य से पररपूररत अमृतोपिे सांसार के कुिो ांका समू िा करने वा े हैं, उन महान् सन्त श्री स्वामी शिवानन्द जी महाराज को बारम्बार प्रर्णाम ह।

यं सवे समुर्ासते सहवनयं सवेशतुल्यं सदा
यस्यान्यादृशवैभवस्य िररतं गायक्तन्त लोका मुदा
येनाहवष्कृतहदव्यजीवनसभा संस्थाहर्ता भूतले
तं रु्ण्याकृहतमुत्तमं हृहद हशवानन्दं सदा भावये ।।१७।।

मैं सिव श्री स्वामी शिवानन्द जी महाराज का ध्यान करता हाँ जो समस्त मनुष्यो ांद्वारा ईश्वर सम वन्धन्दत हैं, शजन्ोनें शिव्य जीवन सांघ की स्थापना की ह तथा शजनके अनुपम उज्ज्व जीवनचररत का गुर्णगान सववत्र प्रसितापूववक शकया जाता ह।

यस्यानुत्तमकोमलाननगलत्कारुण्यमन्दक्तस्मते
नानालोकहनवाहसनो जनगणा हृष्यक्तन्त मग्नाशयााः
यं संसारसमुद्रमग्नशरणं संसेव्य सवे जना
स्सानन्दं हनवसक्तन्त सन्मतहशवानन्दाय तसै्मै नमाः ।।१८।।

गुरुिव श्री स्वामी शिवानन्द जी महाराज को सािाांग प्रशर्णपात ह शजनका मुख असीम करुर्णा एवां हृिय की पावनता को अशभव्यि करती मुस्कान से सुिोशभत ह, शजनका साशिध्य पाकर शवशभि ि्ि ांके शनवासी हशर्वत होते हैं, जो भवसागर में शनमग्न जनो ांके एकमात्र आश्रय हैं तथा शजनकी सेवा करके भिवृन्द अत्यशधक आनन्द प्राप्त करते हैं।

यद्वक्त्रामुबुजदशपनेन कुमहतसूतूणप सुशीलो भवे -
द्यद्वाक्यामृतमाहर्बन् जिजनाः हक्षप्रं त्यजेन्मन्दताम्
यद् ध्यानोत्सुकभिलोकहनवो मोक्षायने संरि-
त्तसै्मै सद्गुरवे नमोक्तिहत हशवानन्दाय हदव्यषपये ।।१९।।

मैं शिव्यशर्व श्री स्वामी शिवानन्द जी महाराज की आराधना करता हाँ शजनके ि्िवन मात्र से ि्ि मनुष्य सज्जन बन जाता ह, शजनके वचनामृत का पान करके मन्दबुन्धद्ध भी ज्ञानवान् हो जाता ह तथा शजनका ध्यान कर सच्चा साधक मोक्ष-मागव पर उत्तरोत्तर प्रगशत करता ह ।

यक्तस्मन् हवक्तस्मतमानसासुसुमनसस्सन्दशपनाकांहक्षण-
स्सामोदं समुरागता नुहतसुमस्रग्वषपणं कुवपते
यस्यानन्दकुटीरवासकुतुकादायाक्तन्त नानाजना
हदव्यहषपप्रवराय सन्मतहशवानन्दाय तसै्मै नमाः ।।२०।।

शजनके ि्िवन एवां साशिध्य पाने की आकाांक्षा से सज्जनवृन्द आनन्द कुटीर आते हैं तथा शवन्धित नेत्रो ांसे शनहारते हुए अपने पशवत्र भावो ांसे गुन्धफफत सुतुशत-मा ाओ ांकी शजन पर वर्ाव करते हैं, उन महान् सन्त गुरुिव श्री स्वामी शिवानन्द जी महाराज को बारम्बार प्रर्णाम ह ।

यद्वक्त्रामुबुजहनसृ्सृताहमतसुधासूक्तिप्रवािोत्कर -
प्रोद्भूताहधकहलप्सया नरगणा यं सवपदोऽऽरासते
येनाशास्यगुणेन दत्तमक्तखलं वेदान्तततत्वं मुदा
सवेभ्यस्सकलहषपसत्तमहशवानन्दाय तसै्मै नमाः ।।२१।।

महामुनीन्द्र श्री स्वामी शिवानन्द जी महाराज को सािाांग प्रशर्णपात ह शजन्ोनें िेिान्त के उच्चिािों का अन्धख शवश्व में प्रचार शकया ह तथा शजनके मुखकम से शनिःसृत अमृतोिि के अजस्र प्रवाह से अशधकाशधक आनन्द प्राप्त करने की अशभ ारा से भिवृन्द शजनकी सिव उपासना करते हैं।

यद्वाक्यामृतमाधुरीगुणगणानाकण्यप दूराज्जना-
स्सवापण्याशु हवसृज्य सन्ततमृषीकेशं समायाक्तन्त ते
वैकुण्ठोर्मरुण्यभूतलहमदं दृष्ट्वा कृताथापहिरं
यत्पादं समुरासते हशवहशवानन्दाय तसै्मै नमाः ।।२२।।

शजनकी मधुर अमृत वार्णी से आकृि हो कर मनुष्य सुिूर ि्िरो ांसे ऋशर्के आते हैं तथा वकुि सम पशवत्र इस स्थान के िशिन से कृताथव हो कर शजनके चरर्णो ांकी शचरका तक आराधना करते हैं, उन महशर्व श्री स्वामी शिवानन्द जी महाराज को मैं प्रर्णाम करता हाँ।

यस्यान्यादृशवैभवस्य िररतं सल्लोककणापमृतं
यहद्व्याकृहतदशपनं सुकृहतहभलपभ्ंयं शुभोदकपदम्
यन्नामश्रवणं समस्तजनतासंसारतार्ारिं
साष्टांगं प्रणमाहम तं हशवहशवानन्ंदं सदानन्ददम् ॥२३॥

गुरुिव श्री स्वामी शिवानन्द जी महाराज को सिाांग प्रशर्णपात ह जो िाश्वत आनन्द प्रिाता हैं, शजनके अनुपम उज्ज्व जीवनचररत का श्रवर्ण सज्जनवृन्द के श ए अमृततुल्य ह, शजनके शिव्य स्वरूप का ििवन वह समृन्धद्ध प्रिान करता ह जो केव पुण्यिी व्यन्धियो ांको ही प्राप्त होती ह तथा शजनके नाम के श्रवर्ण मात्र से समस्त मनुष्यो ांके किो ांका नाि होता ह ।

हनत्यानन्दमशेषजीहवहनविष्वत्यन्तमुत्पादयन्
सुतुत्यानर्पहवहशष्टशीलहनलयाः प्रौढप्रभाभास्वराः
प्रत्यग्रप्रिुरप्रभावहवभवाः शुरुत्यन्तबोधाकरो
नुत्यिो जयताद् जगद्गुरुहशवानन्दाः सदासेहवताः ॥२४॥

जो सुतुत्य हैं, सज्जनवृन्द द्वारा सिा सेशवत हैं, जो समस्त मनुष्यो ांको शनत्यानन्द प्रिान करते हैं, समस्त सि्गुर्णो ांके धाम हैं, शिव्य आभा से सम्पि हैं, जो श्रेष्ठ मानवीय मिाोंों का शवश्व के कोने-कोने में प्रचार करने की अशद्वतीय क्षमता रखते हैं, वेिान्त ज्ञान के सागर हैं, उन जगि्गुरु श्री स्वामी शिवानन्द जी महाराज की जय हो !

प्रत्यक्षेश्वरसहन्नभं प्रहतहदनं प्रत्यग्रतत्त्वोतुसुकं
प्रतूयूिप्रकरान्धकारदलनप्रद्योतनप्रक्रमम्
प्रत्यासन्नशुभप्रकषपहर्शुनालोकप्रदं देहिनां
प्रतुयुत्पन्नमहतं जगद्गुरुहशवानन्ंदं सदा भावये ॥२५॥

मैं सिव जगि्गुरु श्री स्वामी शिवानन्द जी महाराज का ध्यान करता हाँ जो ईश्वर की प्रशतमूशतव हैं, परम सत्य के गहन शचन्तन में शनत्य ीन हैं, जो कुिाग्र बुन्धद्ध से सम्पि हैं, सूयव के समान साधको ांके अज्ञानिकार का नाि करते हैं तथा शजनका ििवन भिो ांके श ए सुख-समृन्धद्ध का सूचक ह।

हनस्तन्ंद्रं हनरवद्यकमपहनरतं हनस्स्वाथपसेवार्ं
हनस्तकै हनगमान्तसारठनाहन्नष्पन्नबोधोदयम्
हनसुतुल्ंयं हनक्तखलाहभवन्द्यमनर्ं हनहलपप्तमाशागणैः
प्रसुतुतं्यं सुगुणाकरं हशवहशवानन्ंदं सदा भावये ॥ २६ ॥

जो कमवठतापूववक शनिःस्वाथव सेवा में सतत सां ग्न हैं, वेिान्त के गहन अध्ययन से शनष्िबोध से सम्पि हैं, शजनके समान कोई अन्य नही ांह, जो समस्त शवश्व द्वारा वन्धन्दत हैं, परम पशवत्र हैं, आिा-तृष्णा से सववथा मुि हैं तथा जो श्लाघनीय गुर्णो ांके सागर हैं, उन महान् सन्त श्री स्वामी शिवानन्द जी महाराज की मैं सिव आराधना करता हाँ।

कल्याणालयमद्भुताहमतगुणाम्भोहधं हवशालाशयं
तुल्यारे्तसमज्ञमुत्कटतरो्हनष्ंठं प्रसन्नाननम्

शल्यावेशवशंवदान् जनियानाश्वासयन्ंतं सदा-
सल्लाराृमृतसैिनैक्तश्शवहशवानन्ंदं सदा भावये ।। २७ ।।

मैं सि व सि्गुरु श्री स्वामी शिवानन्द जी महाराज का ध्यान करता हाँ जो कल्यार्ण के धाम हैं, अनन्त सि्गुर्णो ांके सागर हैं, शजनका हिृय अतीव शविा ह, शजनकी ख्याशत अतु नीय ह, जो उत्कट तपोशनष्ठ हैं, शजनका मुख मुस्कान से सिुोशभत ह तथा जो भवपिा में फाँसे मनुष्यो ांको अपने अमृतोपििे से सान्त्वना प्रिान करते हैं।

कल्याणानां हनधानं कहलमलशमनं सक्तच्चदानन्दलीनं
तुल्यारे्तप्रभावप्रकरहवलसनाद् द्योहतताशावकाशम्
शल्यावेशादशेषान् सदयमहवरतं ऱ्ालयन्ंतं स्वसूक्त्या -
वल्या ऱीयूषवषेररव भजत हशवानन्दयोगीन्द्रमेनम् ।।२८।।

जो समस्त सि्गुर्णो ांके मूशतवमन्त रूप हैं, कश युग के िोर्ो ांका नाि करने में सक्षम हैं, सि व सन्धच्चिानन्द में ीन हैं, जो अपने अनुपम प्रभाव से अन्धख शवश्व को प्रकाशित कर रहे हैं तथा जो करुर्णापूववक अपने उपििेामृत की वर्ाव करके भवसागर में शनमग्न जनो ांकी सतत रक्षा करते हैं, ऐसे योगीन्द्र श्री स्वामी शिवानन्द जी महाराज की आप सभी आराधना करें।

वेदान्तारामभूमावहवरलहवलसत्तत्त्वसूनप्रकाण्डा-
न्यास्वाद्यास्वाद्य हृद्ंयं प्रणवमयमिागीतमेवालन्र्तम्
आकृष्टानेकलोकं मुहनहवहकरहर्क श्रेेष्ठवर्द्ाजमानं
वन्ेदे वन्दारुवृन्दाहिपतिरणयुगं श्रीहशवानन्दमेनम्।।२९।।

मैं गुरुिव श्री स्वामी शिवानन्द जी महाराज की वन्दना करता हाँ शजनके पावन चरर्णो ांकी भिवृन्द सिव अचवना करते हैं तथा जो मुशन-रूपी पशक्षयो ांमें श्रेेष्ठ कोशक पक्षी सदृ विान्त-उद्यान के तत्त्व-पुष्पो ांकी मधु का अनेको ांबार आस्विान कर प्रर्णव के मधुर नाि से समस्त शवश्व को अपनी ओर आकशर्वत कर रहे हैं।

कारुण्यालोकसंभाहवतजनहनविं हनत्यमालोकभाजां
कालुष्यावेशनाशोतु्सुकमक्तखलजनाशास्यहदव्यप्रभावम्
कामक्रोधाहदीनं हनजमनहस जगत्साहक्षणं वीक्षमाणं
काष्ठान्तोदीणपकीहतिं हृहद भजत हशवानन्दमानन्दमूहतपम् ।। ३० ।।

योगीन्द्र श्री स्वामी शिवानन्द जी महाराज की सभी आराधना करें जो आनन्द के मूशतवमन्त रूप हैं, अपनी करुर्णापूर्णव दृशि से भिवृन्द में नवीन ऊजाव एवां उत्साह का सांचार करते हैं, उनके पापो ांका नाि करने हेतु जो सिव उतुसुक हैं, समस्त मनुष्यो ांद्वारा वन्धन्दत हैं, काम-क्रोधाशि से सववथा मिु हैं, जो अपने हृदेिे में परम पुरुर् का िििन करते हैं तथा शजनका उज्ज्व यि अन्धख शवश्व में व्याप्त ह।

नानालोकाहभवन्द्ंयं हनरवहधहनगमाधीहतलब्धावबोधम्
मानातीतानुभावं महितगुणगणोदारकेदारभूतम्
दीनाऱीनानुकम्पातरहलतमनसं हदव्यतेजोहवलासम्
ध्यानालीनान्तरंगं हृहद भजत हशवानन्दयोगीन्द्रमेनम् ।। ३१ ।।

जो शवश्व के शवशभि भागो ांसे आए भिवृन्द द्वारा वन्धन्दत हैं, अनेक िास्तो ांके शिवि अध्ययनोपरान्त प्राप्त ज्ञान से सम्पि हैं, शजनकी कीशतव अनन्त ह, जो समस्त सिगुर्णो ांके भण्डार हैं, शजनका हृिय िीनिि-ुःन्धखयो ांके कि िेखि कर िशवत हो जाता ह, जो शिव्य तेज से शवभाशसत हैं, गहन ध्यान में ीन हैं, ऐसे योगीन्द्र श्री स्वामी शिवानन्द जी महाराज की सभी वन्दना करें।

सौमुख्यं सन्ततं सज्जनहनविसमाशास्यसत्कमपहनष्ठा
वैमुख्यं र्ार्कृते्येष्वक्तखलर्हतर्दाम्भोजभक्तिप्रकषप :
इत्येवं हृदव्यभव्यप्रकटगुणगणाम्भोहधरानन्दमूहतपाः
सुतुत्यािपनर्पशीलो जयहत गुरुवराः श्रीहशवानन्दयोगी ।।३२।।

महान् तपस्वी गुरुिेव श्री स्वामी शिवानन्द जी महाराज की जय हो जो सिव स्नेही हैं, सतत ऐसे सत्कायों में सां ग्न हैं शजनकी सज्जनवृन्द प्रांसिा करते हैं, जो िुषूकृत्यो ांसे सववथा शवमुख हैं, शजनका प्रभु-चरर्णो ांमें दृढ़ अनुराग ह, जो भव्य सिगुर्णो ांके सागर हैं एवां शिव्य आनन्द के मूशतवमन्त रूप हैं।

लोकक्षेमाय हनत्यं हनजमनहस जगन्नायकं प्राथपयन्तम्
शोकक्षामाय नृणां समुहितसुर्थान् सन्ततं दशपयन्तम्
स्तोकव्यािाररर्ानाशनभजनगुणान् बाढमुद्बोधयन्तम्
योगासीनं मिान्तं हृहद भजत हशवानन्दयोगीन्द्रमेनम्।।३३।।

जो सिव ोक-कल्यार्ण के श ए भगवान् से प्राथवना करते हैं, साांसाररक मनुष्यो ांके िुःखो ांका िमन करने हेतु उन्हें अपने सिुपिेिो ांद्वारा उशचत मागविविन प्रिान करते हैं, साथ ही उन्हें आचार-व्यवहार, सांयशमत आहार, शमतभार्षण सम्बन्धी शिक्षा िेते हैं तथा जो शनत्य योगारूढ़ हैं, उन महान् सन्त श्री स्वामी शिवानन्द जी महाराज की सभी आराधना करें।

वेदान्तोत्कृष्टतत्त्वान्यक्तखलजनगणान् हनत्यमुक्त्वा हनतान्तम्
मोदावेशप्रकाशप्रकरमहवरतं गाढमुत्पादयन्तम्
सादारे्तं सुकमापण्यनवरतमरं कतुपकामं हनकामम्
लोकािायं मुनीन्द्रं हृहद भजत हशवानन्दमानन्दकन्दम् ।।३४।।

जगद्गुरु श्री स्वामी शिवानन्द जी महाराज की वन्दना करें जो आनन्द के स्रोत हैं, जन-जन में वेिान्त के परमानन्दप्रिायक उच्च आध्यान्धत्मक सत्यो ांके प्रचार में सतत सां ग्न हैं, जो सिव अथक रूप से सत्कायव करने को समुत्सुक हैं।

कारुण्यालोकजालैस्सकलजनियान् हनत्यमाह्लादयन्तम्
कालुष्याशेषहवध्वंसनहवहितमहतं हवश्वलोकाहभवन्द्यम्
कामाद्युग्राररर्हंसाहनरुणमनुर्मामेयहदव्यप्रभावम्
सीमातीतानुकम्पं हृहद भजत हशवानन्दमानन्दमूहतपम् ।। ३५ ।।

जो आनन्द के मूशतवमन्त रूप हैं, अपनी कृपापूर्णव दृशि से समस्त मनुष्यो ांको अत्यशधक आह्लाशित करते हैं, जो समस्त शवश्व से पापो ांको शवध्वांस करने हेतु दृढ़सांकन्धल्पत हैं, काम-क्रोधाशि ितुरुओ ांके निा में शनपुर्ण हैं, शजनका

अनुपम शिव्य प्रभाव ह तथा शजनकी करुर्णा असीम ह, उन शवश्ववन्धन्दत महान् सन्त श्री स्वामी शिवानन्द जी महाराज की सभी आराधना करें।

लोकक्ेषेमोत्ुसुकमहवरतं मानवानां कृर्ादाप -
लोकस्तोमैरहमतकुतुकं वधपयन्ंतं हनतान्तम्
शोकचे्छेदे भवगदजुषामुद्यतं हदव्यभव्या-
लोकव्रातसुफ़ुररतवरुषं श्रीहशवानन्दमीमी ।। ३६ ।।

मैं श्री स्वामी शिवानन्द जी महाराज की वन्दना करता हाँ जो समस्त शवश्व के कल्यार्ण हेतु सिव समुत्सुक हैं, अपने करुर्णिी हिृय एवां कृपापूर्णव दृशि से समस्त मनुष्यो ांको असीम आनन्द प्रिान करते हैं, भवरोगजशनत ििुःखो ांके निा हेतु समुद्यत हैं तथा जो शिव्य आभा से सम्पि हैं।

वेदप्राज्ंञं हवमलमनसं हवश्वलोकाहभवन्द्ंयं
भेदप्रज्ञारहितमहनशं ब्रह्मलीनान्तरङ्गम्
वीतक्ेलेशं हवहवधजनताशमपसन्धानकृत्य -
व्रातस्थेमश्रमकरमलं श्रीहशवानन्दमीमी ।। ३७।।

मैं गुरुिव श्री स्वामी शिवानन्द जी महाराज की वन्दना करता हाँ जो समस्त विेी ांमें शनष्णात हैं, शजनका मन अत्यन्त पशवत्र ह, जो समस्त शवश्व द्वारा वन्धन्दत हैं, सिव समदृि हैं, जो परम तत्त्व में प्रशतशष्ठत हैं तथा जो अपने िरीर की आवश्यकताओ ांएवां किो ांके शवर्य में शचन्तन नही ांकरते हुए िीनर्ििुःन्धखयो ांको प्रसिता प्रिान करने में सतत सां ग्न हैं।

मन्दसे्मेराननसमुहदतात् सूक्तिर्ीयूषधारा-
वृन्दस्यन्दादक्तखलमनुजान् भक्तिमार्गिं नयन्तम्
कन्दर्ापररं कलुषशमनं हिन्तयन्ंतं प्रवृद्धा -
नन्दस्वान्ंतं हवशदयशसं श्रीहशवानन्दमीमी ।। ३८।।

जो अपने मुस्कराते मुख से अमृतोर्िपि के अजस्र प्रवाह द्वारा समस्त मनुष्यो ांको भन्धि का मागव शिख ाते हैं, जो कल्मर्हारी भगवान् शिव का शनरन्तर शचन्तन करते हैं, जो सिव आनन्द से पररपूर्णव हैं एवां अत्यन्त यिस्वी हैं, ऐसे सि्गुरुिव श्री स्वामी शिवानन्द जी महाराज को मैं सिाांग नमन करता हाँ।

ओहमते्येकाक्षरसहवरलामोदरूविं जर्न्ंतं
भूमीन्द्राद्ैयैरहर् शुभगणार्यिां सेव्यमानम्
जैहमनुयुक्तिप्रविनरतं सात्कत्त्वकोदारकमप -
स्थेमीभूतं भुवनहवहदतं श्रीहशवानन्दमीमी ।। ३९।।

शवश्वशवख्यात महान् सन्त श्री स्वामी शिवानन्द जी महाराज को मेरा सिाांग नमन ह जो अत्यन्त आनन्दपूववक शनरन्तर प्रर्णव का जप करते रहते हैं, राजा-महाराजा भी साांसाररक समृन्धद्ध की ा सा से शजनकी शनत्य सेवा करते हैं, जो जशमशन ऋशर् के शिव्य ज्ञानोर्िपि के प्रचार में सतत सां ग्न हैं तथा जो सत्कार्यों में सिव रुशच ेते हैं।

हनरगपलहवहनगपलहन्नगमसूक्तिसारामृतै -
हनपरस्तहनक्तखलामयं हनहशतशेमुषीवैभवम्
हनरन्तरहवहनसृसृताहमतकृर्ाकुलालोकनं
हवरिजनसत्तमं हशवमुनीन्द्रमेवाश्रये ।।४० ।।

शजन्ोनें अपने उपिपामृत के अजस्त् प्रवाह से मनुष्यो ांकी समस्त आशध-व्याशधयो ांका नाि कर शिया ह, जो अत्यन्त कुिाग्र बुन्धद्ध से सम्पि हैं, जो भिो ांपर अपनी करुर्णापूर्णव दृशि से शनरन्तर कृपा की वर्ाव कर रहे हैं तथा जो वराग्यवान् महापुरुर्ो ांमें सववश्रेष्ठ हैं, उन योगीन्द्र श्री स्वामी शिवानन्द जी महाराज का मैं आश्रय ग्रहर्ण करता हाँ।

समस्तजनरूहजतं शमदमाहदहभश्शोहभतं
सुमत्यपगणवत्सलं सुमधुरोक्तत्करीयूषदम्
अमत्यपतहटनीतटे शुभकुटीरवासहप्रयं
नमज्जनहनषेहवतं हशवमिहषपमेवाश्रये ।।४१।।

मैं महामुनीन्द्र श्री स्वामी शिवानन्द जी महाराज का िरर्णापि हाँ जो समस्त शवश्व द्वारा वन्धन्दत हैं, िमिमाशि की आभा से सम्पि हैं, गुर्णी जनो ांके श्रद्धास्पि हैं, जो अपने अमृतोपिे से मनुष्यो ांको कृताथव करते हैं, शजन्ें माँ गांगा के तट पर न्धस्थत अपने िान्त-प्रिान्त कुटीर में शनवास करना अत्यन्त शप्रय ह तथा भिवृन्द शजनकी शनत्य पे्रमपूववक सेवा करते हैं।

हवशालतरवीक्षणं हवशदकीहतपर्ात्रं त्रयी-
हवशारदमुदारसच्चररतमद्भुतालोकनम्
हवशांर्हतसमहिपतं हवषयबन्धिीनं सदा
हवशाखहर्तृसेवकं हशवमुनीन्द्रमेवाश्रये ।।४२।।

शजनका दृशिकोर्ण अत्यन्त शविाि एवां उिार ह, सुयि अतु नीय ह, जो वेिान्तििवन में शनष्णात हैं, शजनका उज्ज्व जीवनचररत ह, राजा-महाराजा भी शजनकी अचवना-आराधना करते हैं, जो प्रथम ििवन में ही भिवृन्द का मन मोह ेते हैं, जो शवर्यासन्धि से सववथा मुि हैं तथा सि व भगवान् शिव का ध्यान करते हैं, ऐसे योगीन्द्र श्री स्वामी शिवानन्द जी महाराज का मैं िरर्णापि हाँ।

सरोजसदृशाननं सरलकोमलालाहर्नं
हवरीनसुरोहिषं हवरतलौहककाशियम्
र्रोर्कृहततत्परं र्रणतात्महवद्याबलं
प्ररीदहमतादरं हशवमुनीन्द्रमेवाश्रये ।। ४३ ।।

मैं महामुनीन्द्र श्री स्वामी शिवानन्द जी महाराज की भन्धिभावपूववक िरर्ण ग्रहर्ण करता हाँ शजनका मुख प्रफुन्धित कम के समान मनोहारी ह, शजनकी वार्णी मधुर ह, जो सूयव के समान िीन्धप्तमन्त हैं, समस्त साांसाररक बिनो ांसे पूर्णवतया मुि हैं, जो परोपकार हेतु सिव समुतुसुक हैं तथा अध्यात्म-शवद्या के ब से सुसम्पि हैं।

समस्तजनसञ्चयं सततमात्मबोधोदयात्
समञ्जसगुणाकरं भुहव हवधातुकामाः स्वयम्

श्रमप्रकरमुत्कटं प्रकटमेव कुवपन् भृशं
यमप्रसरभास्वराः हशवगुरुहिरं राजताम् ।।४४।।

जो सांसार के सभी मनुष्यो ांको आत्मज्ञान प्रान्धप्त के माध्यम से समस्त सिुर्णो ांसे सम्पि बनाने के इचु्छुक हैं, जो इस शनिःस्वाथव सेवा में सतत सां ग्न हैं तथा जो आत्मसांयम की प्रभा से शवभाशसत हैं, ऐसे महान् सन्त श्री स्वामी शिवानन्द जी महाराज शचरन्तन िीप्यमान रहें।

हनरन्तरहवहनगपतामृतसमानसूैस्सदा
हनरस्तहनक्तखलामयं हनगमराहशर्ारङ्गतम्
हनरङ्कुशमहतं नृणां कुशलमागपसन्दशपकं
हनरर्पगुणसागरं हशवयतीन्द्रमेवाश्रये ।। ४५ ।।

मैं महामुनीन्द्र श्री स्वामी शिवानन्द जी महाराज का िरर्णापि हाँ जो अपने अमृतोपिेश के अजस्र प्रवाह द्वारा मनुष्यो ांके समस्त िुःखो ांका निा करने में सक्षम हैं, जो समस्त िास्त्ो ांमें शनष्णात हैं, उन्मुि प्रज्ञाप्रवाह से सम्पि हैं, साधको ांके िुि मागपिवेिक हैं तथा जो समस्त सि्गुर्णो ांके सागर हैं।
शिवानन्दस्तोत्रपुष्ांजश िः

अमत्यपतहटनीतटे समुर्हवष्टमाराधना-
क्रमप्रविनोतुसुकं प्रणतहशष्यसंसेहवतम्
अमन्दहधषणाबलं सकलसंशयोनूमूलने
समथपमक्तखलेहितं हशवयतीन्द्रमेवाश्रये ।। ४६ ।।

जो गांगा निी के तट पर शवराजमान हो मनुष्यो ांको भगवत्प्रेम एवां भगवद्भक्ति हेतु प्रेररत करते हैं, जो सि व शवनम्र शिष्यवृन्द द्वारा सेशवत हैं, शजनकी बुन्धद्ध अतीव प्रखर ह, जो समस्त सांियो ांके शनवारर्ण में समथव हैं तथा अन्धख शवश्व द्वारा वन्धन्दत हैं, उन योगीन्द्र श्री स्वामी शिवानन्द जी महाराज के पावन चरर्णकम ो ांका मैं आश्रय ेता हाँ।

अवाच्यकदनास्पदाद् भवगदाज्जनान् रहक्षतुं
नवायनहनरीक्षणे कृतमहतं जगदे्देहशकम्
हदवाहनशमहवश्रमं सकललोकसेवाकरं
हशवाख्यगुरुसत्तमं भहवकशीलमेवाश्रये ।।४७ ।।

मैं जगि्गुरु श्री स्वामी शिवानन्द जी महाराज के पावन चरर्णकम ो ांका आश्रय ेता हाँ शजनका स्वभाव अशत मृिु ह, जो भवसागर में शनमग्न जनो ांके उद्धार हेतु नवीन मार्गों की खोज में अपना समूपूर्णव समय व्यतीत करते हैं तथा जो अश्रान्त रूप से कमवठतापूववक शवश्वसेवा में सतत सां ग्न हैं।

सवपदा सकललोकसेवनर्रायणं र्मरा्वनं
सवपदानहनरतं कृर्ाकुलहवलोकनं हवमलभावनम्
शवपहिन्तनहनतान्तलीनहृदयं समस्तदुररतार्हिं
शवपरीशसदृशाननं हशवमिहषपसत्तममुरास्मै ।।४८।।

मैं महान् सन्त श्री स्वामी शिवानन्द जी महाराज की आराधना करता हाँ जो मानवता की सेवा हेतु सिव तत्पर हैं, जो परम पावन एवां अत्यन्त िया ु हैं, शजनकी दृशि कृपापूर्णव ह, जो भिो ांके समस्त किो ांके निाकताव हैं, शजनका मन सि व भगवान् शिव के ध्यान में ीन ह तथा शजनका मुख पूर्णवचन्द्र सम अतीव मनोहारी ह।

ध्यानशीलममलाशयं महिततेजसं सुकृतहवग्रिं
मानवाक्तखलगुणाविाहभनवमागपमागपणहविक्षणम्
आननामुबुजहवहनगपलन्मधुरभाषणं भुवनभूषणं
दीनलोकर्ररर्ालनोतुसुकमुराम्स्मै हशवमिामुहनम् ।।४९।।

मैं महान् सन्त श्री स्वामी शिवानन्द जी महाराज की आराधना करता हाँ जो सतत ध्यानिी हैं, शजनका हृिय अत्यन्त पावन ह, जो उज्ज्व प्रभा से िीप्यमान हैं, सिुर्णो ांके मूशतवमन्त शवग्रह हैं, जो मनुष्य जाशत के कल्यार्णाथव नवीन मागों एवां साधनो ांकी खोज में शनरन्तर सां ग्न हैं, शजनके कम सदृ मनोहारी मुख से मधुर वचनामृत की शनरन्तर वर्ाव होती रहती ह , जो अन्धख शवश्व के प्रकािस्तम्भ हैं तथा जो िीनर्िुःन्धखयो ांके कि शनवारर्ण
हेतु सिव उतुसुक एवां तत्पर हैं।

सारसान्द्रमधुरोक्तिवषपहशहशरीकृताक्तखलजनोत्करं
सारसाक्षकमनीयरूर्ररलीनमानसमनेनसम्
भारतावहनहवहशष्टनन्दनमुदारशीलमहमतौजसं
स्मेरमक्तण्डतमुखामुबुजं भजत सद्गुरुं हशवमुनीश्वरम् ।। ५० ।।

जो अपने मधुर एवां सारगशभवत वचनो ांसे समस्त मनुष्यो ांके सन्तप्त हृियो ांको िीत ता प्रिान करने में समथव हैं, जो सिव भगवान् हरर के ध्यान में ीन हैं, परम पशवत्र हैं, भारतभूशम के शप्रय सुपुत्र हैं, उिारहृियी एवां अतु नीय तेज से सम्पि हैं तथा शजनका मुखकम मधुर न्धित से सुिोशभत ह, उन सिुरुिव श्री स्वामी शिवानन्द जी महाराज की सभी वन्दना करें।

वणपनीयिररतं भवामयहवनाशनैकहनरतं कृर्ा-
रूणपितसमतान्तकोमलकुशेशयोर्ममुखहश्रयम्
तीणपनैकहवषयाणपवं हवगतहकक्तिषं गुरुवरं गुणो-
दीणपमानसमशेषमानुषहनषेहवतं हशवमुहनं भजे ।।५१।।

मैं महामुनीन्द्र श्री स्वामी शिवानन्द जी महाराज को सिाांग प्रशर्णपात करता हाँ शजनका पावन जीवन-चररत मननीय एवां अनुकरर्णीय ह , जो सांसार के किो ांका समू नाि करने में गहनता से सां ग्न हैं, जो अत्यन्त िया ु हैं, शजनका मुख प्रफुन्धित कम के समान उज्ज्व एवां मनोहारी ह, जो साांसाररक शवर्य-भोगो ांकी तृष्णा से सववथा मुि हैं, जो परम पशवत्र एवां उिारमना हैं तथा जो अन्धख शवश्व द्वारा वन्धन्दत हैं।

सन्ततं सकलभूतजालहितकाहङ्क्षणं सरसभाहषणं
शान्तमानसमतान्तकोमलमुखाब्जहनसूृतमृदुक्तस्मतम्
अन्तकान्तकर्दामुबुजं हशवदमन्तरंगसरसीरुि
हिन्तयन्तमहमतादरं मनहस भावये हशवगुरूत्तमम् ।। ५२ ।।

जो समस्त शवश्व के कल्यार्ण हेतु सिव समुतुसुक हैं, शजनका शचत्त प्रिान्त तथा वार्णी मधुर ह, शजनका मनोहारी मुख मधुर न्धित से सुिोशभत ह, जो सिव भगवान् शिव के पावन चरर्णकम ो ांका ध्यान करते हैं, उन गुरुिेव श्री स्वामी शिवानन्द जी महाराज की मैं अत्यन्त भन्धिभावपूववक आराधना करता हाँ।

सारसाक्षकमनीयहवग्रहवहिन्तनैकहनरतान् सदा
सारसान्द्रमधुरामृतोक्तिहभरलं हिकीषुपमक्तखलान् जनान्
नारदाहदर्ररगीतभक्तिर्थदशपनोतुसुकमनारतं
शारदामृतकराननं भजत भव्यदं हशवगुरूत्तमम् ।।५३।।

जो महशर्व नारि द्वारा प्रशतपाशित भन्धि-मागव के प्रचार हेतु सिव उतुसुक एवां तत्पर हैं, अपने सारगशभवत एवां मधुर वचनामृत द्वारा मनुष्यो ांमें भगवान् शवषुणु के सुन्दर स्वरूप के सतत ध्यान की उत्किा जाग्रत करने में शनरन्तर सां ग्न हैं तथा शजनका मुख िरि ऋतु के चन्द्रमा के समान अतीव मनोहारी ह, उन सववमांग प्रिाता सिुगुरुिेव श्री स्वामी शिवानन्द जी महाराज की सभी वन्दना करें।

हदव्यतत्त्वभररतानशेषहनगमान् हववतपनगणैनृपणां
भव्यदायकसनातनायनहवलोकनाय र्रबोधयन्
हदव्यजीवनसभां समस्तजनताहिताय हवहनवेशयन्
सुव्यवक्तस्थतशुभोदयो जयतु सद्गुरुः हशवयतीश्वराः ।।५४।।

महामुनीन्द्र श्री स्वामी शिवानन्द जी महाराज की जय हो जो सेवा एवां परोपकाररता की भावना में गहनता से प्रशतशष्ठत हैं, शजन्ोनें अन्धख शवश्व के कल्यार्णाथव 'शिव्य जीवन सांघ' की स्थापना की ह तथा शिव्य सत्य से पररपूररत अपने आध्यान्धत्मक साशहत्य के माध्यम से जन-जन को वशिक सनातन धमव से पररशचत कराते हुए सबके कल्यार्ण का मागव प्रिस्त शकया ह।

हनत्यहनमपलसुशीलमाहश्रतजनोत्करावनर्रायणं
कृत्यहभष्ट्टुतमुदीणपभक्तिभररताशयं दुररतनाशनम्
सुतुत्यसद्गुणमुदारमानसमनेनसं सुकृतहवग्रिं
प्रत्ययाकरमनारतं भजत सद्गुरुं हशवयतीश्वरम्।।५५।।

सिुगुरुिेव श्री स्वामी शिवानन्द जी महाराज की सिव वन्दना करें जो परम पावन एवां अत्यन्त िी वान हैं, अपने आशश्रतो ांके कल्यार्ण हेतु सिव उतुसुक हैं, सज्जनवृन्द द्वारा वन्धन्दत हैं, समस्त िुःखो ांके निाकताव हैं, शजनका हृिय अतीव शवा एवां भगवद्भन्धि से पररपूर्णव ह, जो श्लाघनीय गुर्णो ांके स्वामी हैं, पापूिन्य हैं, सिाचार के मूशतवमन्त रूप हैं तथा जो सिा भगवि्-चेतना में सांन्धस्थत हैं।

शश्वनन्त्रश्वरमेव हवश्वमक्तखलं हवशे्वेश्वरे शाश्वते
हवश्वासोऽत्र हवधीयतां नरगणैरानन्दसम्प्राप्तये
आश्वासोक्तिहममां हवतीयप सिसा संसाररोगक्तच्छदे
हवश्विाायपमिहषपसत्तमहशवानन्दाय तुभ्ंयं नमाः ।।५६।।

"यह समूपूर्णव जगत् निावान ह, एकमात्र परमात्मा ही ाश्वत हैं। अतिः मनुष्य को ाश्वत आनन्द की प्रान्धप्त हेतु परमात्मा की िर्ण में जाना चाशहए।" इन सान्त्वनाप्रायक ज्ञानपूर्णव वचनो ांद्वारा भवरोग का निा करने वा े शवश्वगुरु महामुनीन्द्र श्री स्वामी शिवानन्द जी महाराज को मैं सिाांग प्रशर्णपात करता हाँ।
शिवानन्दस्तोत्रपुष्पांजशि ि:

दैवाधीनहमदं जगत् जहनफलावाप्त्यै जगत्साहक्षणाः
सेवाधीरवलम्ब्यतामहवरतं सवैजपगद्वाहसहभाः
एवं सूक्तिसुधाहभवषपणरतायादशपहदव्यषपये
कैवल्योत्तममागपदशपक हशवानन्दाय तुभ्यं नमाः ।।५७।।

"यह शवश्व सवविन्धिमान् प्रभु के अधीन ह । इस मनुष्य जीवन को सफ एवां साथवक बनाने हेतु सभी को उन जगीश्वर की सेवा-आराधना में शनरन्तर गे रहना चाशहए।" इस प्रकार के उपिेामृत की वर्ाव करने में जो सतत सां ग्न हैं, शजनका िािव जीवन समस्त मनुष्यो ांके श ए अनुकरणीय ह तथा जो मोक्षमागव के महान्
पथप्रििवक हैं, उन शिव्यशर्व श्री स्वामी शिवानन्द जी महाराज को मैं श्रद्धापूववक नमन करता हाँ।

संवेशाशनभाषणेषु हमततां भूतानुकम्पां तथा
संवेगस्य हनरथपकत्वमक्तखलानुद्वोधयन्तं हवभुम्
देवे कामररपौ हनवेहशतमहतं हदव्यं हशवानन्दस -
द्योगीन्द्रं समुपास्मै मुहनजनोत्तंसं जगद्देहशकम् ।। ५८।।

हम जगद्गुरु महान् सन्त श्री स्वामी शिवानन्द जी महाराज की आराधना करते हैं शजनका मन सिव भगवान् शिव के ध्यान में ीन ह तथा जो सबको आहार, शनिा एवां वाताव ाप में सांयशमत होने, समस्त प्राशर्णयो ांके प्रशत करुर्णािी होने और उद्वेगो–ांसांवेगो ांकी शनरथवकता समझने की शिक्षा प्रिान करते हैं।

आशापाशहवशेषबन्धहववशा नक्रक्तन्दवं संभ्रमा-
दाशान्तावगतावकाशमक्तखलं धावक्तन्त नानाजनााः
क्लेशावेशवशाहनमान् शुभदं नेतुं प्रवृत्तं जनै-
राशास्याद्भुतवैभवं हृहद हशवानन्दं सदा भावये।।५९।।

मैं गुरुिेव श्री स्वामी शिवानन्द जी महाराज का ध्यान करता हाँ जो आिा-तृष्णाओ ांके पाि में बद्ध, ििुःख-कि से सन्तप्त, िान्धन्त एवां आनन्द की खोज में शववितापूववक चहुँओर भटकते हुए मनुष्यो ांको कल्यार्ण का मागव शिखाने में शनरन्तर सां ग्न हैं, तथा शजनका वभव अद्भुत ह।

सदा सकलसज्जनैस्समहभवन्द्यपादामुबुजं
सदाशययशोयुतं समहवलोकनात्तादरम्
वदान्यवरमुत्तमं वहशजनावतंसं सतां
मुदास्पदमुपास्मै हशवमुहनं जगद्देहशकम् ।।६० ।।

शजनके पावन चरर्णकम ो ांकी सज्जनवृन्द सिव अचवना करते हैं, शजनके हृिय की शविा ता सुशवख्यात ह, शजनकी दृशि सम एवां स्वभाव अत्यन्त उिार ह, जो आनन्दधाम ह तथा शजतेन्धन्द्रय महापुरुर्ो ांमें सववश्रेष्ठ हैं, उन शवश्वगुरु श्री स्वामी शिवानन्द जी महाराज की मैं आराधना करता हाँ।

कलाहनहधकलार्सक्तिहलतितसं हित्कला-
हवलासहवशदौजसं हवहदतवेदसारोत्करम्
कलाकहलतकौतुकं कलुषलेशिीनाशयं
तुलारहितसद्गुणं हशवमुनीन्द्रमेवाश्रये ।।६१ ।।

मैं मुनीन्द्र श्री स्वामी शिवानन्द जी महाराज के चरर्णकम ो ांका आश्रय ेता हाँ शजनका शचत्त भगवान् शिव में ीन ह, जो परम च तन्य की िन्धिप्त से िीप्यमान हो रहे हैं, जो वशिक िास्त्ो ांके ज्ञाता हैं, शवशवध क ाओ ंएवां शवज्ञान के शवर्य में जानने को सि व समुतुसुक हैं तथा शजनका मन अत्यन्त पावन और अतु नीय सगुर्णो ांसे पररपूर्णव
ह ।

हनतान्तहवमलाशयं हनत्तखललोकसंसेहवतं
कृतान्तरररुहिन्तने कृतमहतं कृर्ार्ांर्हतम्
अतान्तहधषणाबलं र्गुणेक्षणाकांहक्षणं
मतान्तरहवशारदं हशवमुनीन्द्रमेवाश्रये ।।६२।।

शजनका चररत्र अत्यन्त शवम ह, जो समस्त शवश्व द्वारा वन्धन्दत हैं, सि व भगवान् शिव के ध्यान में ीन हैं, करुर्णा के सागर हैं, शजनकी बुन्धद्ध अतीव कुिाग्र ह, जो परोपकार हेतु सि व तत्पर हैं तथा शजन्हें अन्य धमों का शर्वि ज्ञान ह, उन महान् सन्त श्री स्वामी शिवानन्द जी महाराज का मैं िर्णापि हाँ।

भवाणपवभवाणपसां भ्रमगणेषु मन्नान् जनान्
जवाहन्नजकृर्ाप्लवं समवतायप सन्तारकम्
स्तविापगुणसागरं मधुरसूक्तिर्ीयूषदं
हशवाख्यमुहनसत्तमं सुकृतमूहतपमेवाश्रये ।। ६३ ।।

जो सिुर्णो ांके मूशतवमन्त शवग्रह हैं, भवसागर में शनमग्न जनो ांका अपनी करुर्णा रूपी नौका द्वारा उद्धार करते हैं तथा जो मधुरवचनामृतप्रिाता हैं, उन महामुनीन्द्र श्री स्वामी शिवानन्द जी महाराज के चरर्णकम ो ांका मैं आश्रय ेता हाँ।

अिौ भाग्यं भाग्यं मधुरमधुरोदाररररतम्
मिोराहशं भव्यप्रहथतसुगुणव्रातभररतम्
अिौरात्रं लोके भवगदहवनाशैकहनरतम्
हशवानन्दं हदव्यं हनकटभुहव श्र्याम्यहवरतम् ।। ६४।।

अहो ! मेरा परम सौभाग्य ह शक मैं महान् सन्त श्री स्वामी शिवानन्द जी महाराज का इतनी शनकटता से सतत िि वन कर रहा हाँ शजनका चररत अत्यन्त पावन एवां मधुर ह, जो शिव्य प्रकािपुांज हैं, श्लाघनीय गुर्णो ांके भण्डार हैं तथा जो अहशनवि साांसाररक मनुष्यो ांके भवरोग के शवनाि में सां ग्न हैं।

सदा सत्तभा: सेव्यं सकलगुणसन्दोिसदनम्
हिदानन्दे लीनाशयमहवरतं स्मेरवदनम्

मुदा कुतु लोकं सकलमहनशं वीतकदनम्
श्रमं कुवपन्तं तं प्रणमत हशवानन्दयहमनम्।।६५।।

मुनीन्द्र श्री स्वामी शिवानन्द जी महाराज के चरर्णकम ो ांमें श्रद्धापूववक प्रर्णाम करें जो सज्जनवृन्द द्वारा वन्धन्दत हैं, समस्त स्िगुर्णो ांके साकार शवग्रह हैं, परम च तन्य के आनन्द में अशवरत प्रशतशष्ठत हैं, शजनका मुख मुस्कान से सुिोशभत ह तथा जो सांसार के किो ांके शनवारर्णाथव सि व उत्साहपूववक कायवरत हैं।

त्रयीतत्त्वं साधारणजनसुबोधाय सकलम्
शतातीतग्रन्ैाः सरलर्दसंधातरहितैाः
सुफुटीकुवपन् धमापयनसततसञ्चारहनरताः
हशवानन्दाः सोऽयं जयतु हिरमुत्याां मुहनवराः ।। ६६ ।।

जो सि व धमव के पथ पर सांचरर्णी हैं तथा शजन्ोनें वेिो ांके गूढ़ तत्त्वो ांको सामान्यजन के श ए बोधगम्य बनाने हेतु अत्यशधक सर एवां सुन्दर ि ी में सौ से अशधक ग्रन्ो ांकी रचना की ह, ऐसे मुशनश्रेष्ठ श्री स्वामी शिवानन्द जी महाराज अनेकानेक वर्ों तक इस धरा पर शवराजमान रहें।

भवाम्भोधौ मग्नं मनुजगणमुद्धतुपमक्तखलम्
हदवारात्रं कमपप्रकरहमि कुवापणमतुलम्
हनवाताब्जस्थेमे हृहद हगररशमालोक्य मुहदतम्
हशवानन्दं हदव्यं प्रणमत जगद्वाहसजनताः ।। ६७।।

भवसागर में शनमग्न जनो ांके उद्धार हेतु जो अहशनवि कायवरत हैं तथा वायुरशहत स्थान में रखे कम -पुष्-सम न्धस्थर अपने हृिय में भगवान् शिव के िि वन से जो शनत्य प्रफुन्धित हैं, उन महान् सन्त श्री स्वामी शिवानन्द जी महाराज के चरर्णकम ो ांमें शवश्व के समस्त मनुष्य श्रद्धापूववक प्रर्णाम करें।

सकलगुणहनधानं सज्जनैसे्सेव्यमानं
सरसमधुरशीलं सवपभूतानुकूलम्
सहवतृसदृशभासं जाह्नवीतीरवासं
भहवकसुकृतरूरं् श्रीहशवानन्दमीिे ।। ६८ ।।

मैं श्री स्वामी शिवानन्द जी महाराज की वन्दना करता हाँ जो समस्त सगुर्णो ांके भण्डार हैं, सज्जनवृन्द शजनकी प्रेमपूववक सेवा करते हैं, शजनका स्वभाव अत्यन्त मधुर एवां सुन्दर ह, जो सभी प्राशर्णयो ांके प्रशत समभाव रखते हैं, सूयव के समान िीप्यमान हैं, गांगा निी के तट पर न्धस्थत एक कुटीर में शनवास करते हैं तथा जो िु भता एवां सिाचाररता के मूशतवमन्त रूप हैं।

शु्रुहतगतबहुतत्त्वार्थ्ान्
वीतशङ्क शु्रुहतमधुरविोहभहनपभपरं भाषमाणम्-
नुहतर्दमक्तखलानां श्रीहशवानन्दयोगी-
श्वरमतुलमनीषावैभवं भावयेऽहम् ।।६९।।

मैं महान् सन्त श्री स्वामी शिवानन्द जी महाराज का ध्यान करता हाँ जो सववसुतुत्य हैं, शजनकी बुन्धद्ध अतु नीय ह तथा जो िास्त्ों ांके गूढ़ाथव का अपने मधुर वचनो ांमें शनत्य शववेचन करते हैं।

हनक्तखलहनगमसारं हनत्यमुद्बोधयन्तं
हनहशतमहतहवशेषं हनहवपकारं हनरीम्
हनरवहधजनवन्द्यं हनमपलं लोकसेवा-
हनरतमहमतबोधं श्रीहशवानन्दमीी ।। ७० ।।

जो असाधारर्ण मेधासम्पि हैं, शजज्ञासुओ ांको विी ांके सारतत्त्व का ज्ञान प्रिान करते हैं, शजनका मन समस्त इच्छाओ ांएवां वृशत्तयो ांसे रशहत ह , जो असीम बोधयिु हैं, पशवत्रमना हैं, अनेकानेक मनुष्यो ांद्वारा वन्धन्दत हैं तथा जो मानवता की सेवा में सतत सां ग्न हैं, उन शिव्यशर्व श्री स्वामी शिवानन्द जी महाराज की मैं आराधना करता हाँ।

सकलजनगुणाथिं सूक्तिरीयूषधारा-
हनकरशतमतन्द्रं वषपमाणं हनकामम्
अनुर्ममहिमाढ्यं श्रीहशवानन्दयोहग-
प्रवरमतनुभक्त्या सन्ततं भावयेऽस्मि्।।७१।।

जो मनुष्यो ांके कल्यार्णाथव अश्रान्त रूप से अपने मधुर वचनामृत की अजस्र वर्ाव कर रहे हैं तथा शजनकी मशहमा अनुपमेय ह, उन योगीन्द्र श्री स्वामी शिवानन्द जी महाराज का मैं सि व अत्यन्त भन्धिपूववक ध्यान करता हाँ।

जननमरणहसन्धौ संर्तन्तं हनतान्तं
कदनमनुभवन्तं लोकमुद्धतुपकामम्
सकलजनहशवाथिं हदव्यगीताथपसारं
सततमुर्हदशन्तं श्रीहशवानन्दमीी ।। ७२ ।।

मैं शिव्यशर्व श्री स्वामी शिवानन्द जी महाराज की आराधना करता हाँ जो भवसागर में शनमग्न िुःन्धखत मनुष्यो ां के उद्धार हेतु शनरन्तर शक्रयािी हैं तथा जो शवश्व-कल्यार्ण के श ए श्रीमद्भगवि्गीता की शिव्य शिक्षाओ ांके प्रचार में सतत सां ग्न हैं।

हनरवहधहनगमान्ताधीहतलब्धावबोधं
हनरवरतमुदीणपध्यानलीनान्तरंगम्
हनरर्मक्तखललोकक्षेममागेकहिन्ता -
हनरतमहमतकीहतिंश्रीहशवानन्दमीी।। ७३।।

मैं योगीन्द्र श्री स्वामी शिवानन्द जी महाराज को सािाांग प्रशर्णपात करता हाँ शजन्ोनें असांख्य िास्त्ो ांका गहन अध्ययन कर असीम ज्ञान प्राप्त शकया ह, जो ध्यान में शनत्य ीन हैं, परम पशवत्र हैं, ोककल्यार्ण हेतु नवीन साधनो ांकी खोज में सिव समुत्सुक हैं तथा शजनकी अशमत कीशतव ह ।

र्रणतशहशहबम्बप्रोल्लसद्वक्त्रर्द्मो-
र्र लसदनुकम्पारूणपमन्दक्तस्मतार्द्पम्
र्रसरगतहशष्यैसे्सेव्यमानं मुनीनां

र्ररवृढमहतहदव्ंयं श्रीहशवानन्दर्मीे ।।७४।।

शजनके पूर्रेणेन्दु सिम िीन्धप्तमन्त मुख से करुर्णा की िीत शकरर्णें शनरन्तर शनिःसृत हो रही हैं तथा शिष्यवृन्द द्वारा शजनकी शनत्य सेवा एवां आराधना की जाती ह, उन मुशनश्रेष्ठ श्री स्वामी शिवानन्द जी महाराज की मैं वन्दना करता हाँ।

हनक्तखलजनहनषेव्ंयं हनसुतुलानर्पशीलं
हनहशतमहतहवलासं हनयपदालोलभासम्
हनकटगतजनानां हनत्यमानन्दर्द्ा-
हनकरमुर्हदशन्ंतं श्रीहशवानन्दर्मीे ।।७५ ।।

जो समूपूर्णव शवश्व द्वारा वन्धन्दत हैं, शजनका चररत्र अत्यन्त पावन एवां बुन्धद्ध अतीव तीक्ष्ण ह, शजनका मुख शिव्य प्रकाि से ियुशतमान ह तथा जो सन्मागव पर च ने को उतुसुक मनुष्यो ांको शनरन्तर मार्गविवन प्रिान करते हैं, उन गुरुिव श्री स्वामी शिवानन्द जी महाराज की मैं वन्दना करता हाँ।

सुरुहिरसुगुणानां सुन्दरावासकेन्द्रं
हनरुर्मशुभशीलं हनिलानन्दसान्द्रम्
गुरुवरमक्तखलानां श्रीहशवानन्दयोगी-
श्वरमहवकलरुर्ण्ंयं भावये हदव्यरूर्म्।।७६।।

मैं योगीन्द्र श्री स्वामी शिवानन्द जी महाराज के शिव्य रूप का ध्यान करता हाँ जो सौन्दयव एवां सिुर्णो ांके मूशतवमन्त शवग्रह हैं, पुण्यशिखर हैं, शजनकी महानता अनुपमेय ह, जो शविुद्ध आनन्द से पररपूर्णव हैं तथा अन्धख ोकगुरु हैं।

मधुरमधुरवाणीं ंसन्ततं व्यािरन्ंतं
हवधुवदनमुदारं हवश्ववन्द्ंयं हनतान्तम्-
भवगदिरणोत्ंकं श्रीहशवानन्दयोहग
प्रवरमहमतकीहतिं भावये भावुकांगम् ।।७७।।

मैं योगीन्द्र श्री स्वामी शिवानन्द जी महाराज का ध्यान करता हाँ जो सिव अतीव मधुरतापूववक वाताव ाप करते हैं, अत्यन्त उिार हैं, शजनका मुख पूर्णवचन्द्र सम िीप्यमान ह, जो समूपूर्णव शवश्व द्वारा वन्धन्दत हैं, भवताप से सन्तप्त मनुष्यो ांकी रक्षा हेतु सिा उतुसुक हैं तथा शजनकी कीशतव अशमत ह।

र्ररणतर्ररबोधं र्ावनानर्पशीलम्
र्ररसरगतहशष्यान् तत्त्वमध्यार्यन्तम्
र्ररलसदनुभावं सवपदा सवपभूतो
र्रर र्तदनुकम्ंपं श्रीहशवानन्दर्मीे ।। ७८ ।।

जो सवोच्च सत्य के ज्ञाता हैं, शजनका चररत अत्यन्त पावन ह, जो अपने शिष्यो ांको सिा प्रसितापूववक परम तत्त्व का ज्ञान प्रिान करते हैं, शिव्य प्रभासम्पि हैं तथा जो समस्त प्राशर्णयो ांपर सिव अपनी अनुकम्पा की वृशि करते हैं, उन श्री स्वामी शिवानन्द जी महाराज की मैं वन्दना करता हाँ।

हवहवधहनगमबोधात् प्राप्तैतोहवकासं
सहवधगतजनानां हित्तमाह्लादयन्तम्
अहवरतमक्तखलानां क्षेमकृत्यैकदीक्षं
सुहवहदतयहतवयिं श्रीहशवानन्दमी ।।७९।।

मैं महामुनीन्द्र श्री स्वामी शिवानन्द जी महाराज की आराधना करता हाँ शजनका पावन नाम सुशवशित ह , जो अपने समीप आने वा े समस्त जनो ांमें प्रसिता का सांचार करते हैं, अशवरत ोककल्यार्णकारी कायों में सां ग्न हैं तथा शजन्होनें शवशभि िास्त्ो ांके गहन अध्ययनोपरान्त अत्यन्त शविा एवां उिार दृशिकोर्ण प्राप्त शकया ह।

भववाररहधर्ोरमोहमपर्रा-
भवर्ीहितसंनिनोऽमिरम्
हशवदेहशक ते दर्द्मगतोऽ-
भवमीश कृर्ालय र्ालय माम् ।।८०।।

हे प्रभो! हे गुरुिव शिवानन्द ! आप करुर्णा के मूशतवमन्त अवतार हैं, मैंने आपके चरर्णकम ो ांका आश्रय ग्रहर्ण शकया ह, भवसागर की घोर उशमवयो ांसे अतीव पीशड़त एवां अत्यशधक शवश्रान्त मुझ िरर्णागत की रक्षा कीशजए।

करुणावरुणालय लोकगुरो
तरुणारुणभास्वरगात्र हवभो
हशवदेहशक ते मधुरोक्तिसुधा
हशवदा सततं जनतामवतात्।।८१ ।।

हे महान् उिीपक गुरुिव शिवानन्द ! आप शवश्वगुरु हैं, प्रेम एवां करुर्णा के शसिु हैं तथा उियमान सूयव सदृ िीन्धप्तमन्त हैं। आपके मधुरवचनामृत समस्त प्राशर्णयो ांके श ए अशमत मांग प्रियक हो।ां

अहनशं मनुजान् सुजनान् कुरुते
मुहनर्ुङ्गव ते सुविाः सुमते
भहवकामलसद्गुणवाररहनधे
हशवदेहशक ते िरणं शरणम् ।।८२।।

हे महान् गुरु शिवानन्द ! आप यशतश्रेष्ठ हैं, आपके ज्ञानपूर्णव वचन सामान्य सांसाररक मनुष्यो ांको पावन कर उन्हें धाशमवक बनाते हैं। आप सांसाररकता के क ुर् से मुि, समस्त सिुर्णो ांके सागर हैं। मैं आपके चरर्णकम ो ांका आश्रय ग्रहर्ण करता हाँ।

भुवनेष्वक्तखलेषु जनान् सुमती -
नवलोकहयतुं हनतरां श्रमवान्
नवकोमललेखनदानर्राः
हशवयोहगवराः सुहिरं जयतात्।।८३।।

जो अन्धख शवश्व के मनुष्यो ांके कल्याणाथव शनरन्तर कायविी हैं तथा अपने असांख्य भिो ांको मधुर एवां प्ेरणाप्रि पत्र श खने में अतीव किु हैं, उन महामुनीन्द्र श्री स्वामी शिवानन्द जी महाराज की सिा जय हो।

हशवानन्दहदव्यहषपगोत्रेन्द्रजाता
र्ब्रह्मर्ाथोहधमागापहभयान्ती
हशवानन्दस्तोत्ररुष्पांजहलाः
सुधासूक्तिगङ्गा सदा हनगपलन्ती
जगत् सवपमेतत् र्हवत्रीकरोतु ।।८४।।

शिव्यशर्व शिवानन्द रूपी शहमा य से शनिःसृत तथा परब्रह्म के ज्ञान रूपी सागर की ओर प्रवाशहत वचनामृत-गांगा समस्त शवश्व को पशवत्र बनाये।

भवाम्भोहधमन्नान् जनानुद्धरन्तं
नवामन्दिैतन्यमुद्दीर्यन्तम्
हदवारात्रमुत्कृष्टकमोत्सुकं तं
हशवानन्दयोगीन्द्रमेवाश्रयेऽहम् ।।८५ ।।

जो भवसागर में शनमग्न जनो ांका उद्धार करते हैं, साधकवृन्द में सूक्ष्म प्रज्ञा की ज्योशत प्रज्वश त करते हैं तथा जो अहशनवि शनिःस्वाथव सेवा में सां ग्न हैं, उन महायोगीन्द्र श्री स्वामी शिवानन्द जी महाराज के चरणकम ो ांका मैं आश्रय ग्रहण करता हाँ।

समस्ताहभवन्द्यं सुमत्यापहभनन्द्यं
समालोकशीलं समारूढयोगम्
समासाहदतानेकहदव्यप्रभावं
हशवानन्दयोगीन्द्रमेवाश्रयेऽहम् ।।८६ ।।

मैं महान् सन्त श्री स्वामी शिवानन्द जी महाराज का िरणापि हाँ जो समस्त मनुष्यो ांद्वारा पूशजत एवां वन्धन्दत हैं, समदृशिसम्पि हैं, योगारूढ़ हैं तथा शजन्ोनें अनेकानेक शिव्य मशहमामयी उप न्धियााँ अशजवत की हैं।

हवशालावबोधं हवहशष्टानुभावं
प्रशान्तारर्षट्कं प्रशस्तादानम्
कृशानूर्मोदीणपतेजोहभदीप्तं
हशवानन्दयोगीन्द्रमेवाश्रयेऽहम् ।।८७ ।।

मैं महायोगीन्द्र श्री स्वामी शिवानन्द जी महाराज के चरणकम ो ांका आश्रय ग्रहण करता हाँ जो अत्यन्त महान् हैं, शजनका ज्ञान-भण्डार अशत शवि ह, शजन्ोनें कामक्रोधाशि शिरपुओ ांका नाि कर शिया ह, अनेक श्लाघनीय उप न्धियााँ अशजवत की हैं तथा जो प्रचण्ड अशग्न सदृ ि ीप्यमान हैं।

गंगानदीतटहनवाहसनमाप्तकामं
तुंगानुभावमनवद्यगुणाहभरामम्

संगावरुद्धमनसं हवनतोऽक्तस्म ितो-
रंगावलोहकतहशवं हशवदेहशकं तम् ।।८८ ।।

जो आप्तकाम हैं, माँ गांगा के पावन तट पर शनवास करते हैं, शजनका चररत्र शनष्क ुर् ह तथा ख्याशत शवपु ह, जो शनरासि हैं तथा भगवान् शिव के ध्यान में सतत ीन हैं, उन महान् गुरु श्री स्वामी शिवानन्द जी महाराज को मैं श्रद्धापूववक नमन करता हाँ।

वन्दारुवृन्दर्ररसेहवतर्ादर्द्म
मन्दारदारुसममाहश्रतजीवभाजाम्
वृन्दारकेन्द्रसिजं हृहद वीक्षमाणं
वन्दामि हशवगुरुं सुकृतैकमूहतपम् ।।८९ ।।

शजनके पावन चरर्णकम ो ांकी भिवृन्द द्वारा आराधना की जाती ह, जो िरर्णापि जनो ांके श ए कल्पवृक्ष सदृ हैं, समस्त िुभ कमों के मूशतवमन्त अवतार हैं तथा जो अपने हृिय में शनरन्तर भगवान् श्री कृष्ण का िीवन करते हैं, उन महान् गुरु श्री स्वामी शिवानन्द जी महाराज की मैं वन्दना करता हाँ।

वाराहशराहशरशनाशहनर्ाहणमुखै्यै -
राराहधतं हशवमुनीन्द्रमनर्पशीलम्
साराहभराममधुरोक्तिसुधामुबुरूरा -
साराहभरहञ्जतजनं शरणं प्रर्द्ये ।।१०।।

मैं महान् सन्त श्री स्वामी शिवानन्द जी महाराज की िरर्ण ेता हाँ जो महान् सम्राटो ांद्वारा पूशजत एवां वन्धन्दत हैं, शजनका चररत पावन ह तथा जो अपने मधुरवचनामृत द्वारा समस्त मनुष्यो ांको अत्यशधक आनन्द प्रिान करते हैं।

र्ीनावबोधहनलयं हनक्तखलाहभवन्द्यं
दीनावनैकहनरतं हवमलान्तरंगम्
नानागुणोदवहसतं मदनाररहिन्ता -
लीनाशयं हशवमुनीश्वरमाश्रयेऽमि् ।।९१ ।।

मैं महामुनीन्द्र श्री स्वामी शिवानन्द जी महाराज की िरर्ण ग्रहर्ण करता हाँ जो समस्त ज्ञान के भण्डार हैं, अन्धख शवश्व द्वारा वन्धन्दत हैं, िीनजनो ांके पररत्रार्ण में अशवरत सां ग्न हैं, शजनका अन्तिःकरर्ण शनमव ह, जो समस्त सिुर्णो ांके धाम हैं तथा शजनका शचत्त भगवान् शिव के शचन्तन में शनत्य-सांन्धस्थत हैं।

जनगणगुणकमापर्ण्यिं कतुपकामं
मनहसजररुरूर्ध्यानलीनान्तरंगम्
अनवरतमुदीणपज्योहतषा राजमानं
हवनतजनर्रीतं श्रीहशवानन्दमीी ।।९२।।

जो समस्त प्राशर्णयो ांके कल्यार्णाथव अहशनवि कमविी हैं, शजनका हृिय भगवान् शिव के ध्यान में सतत ीन ह , जो आध्यान्धत्मक जगत् के प्रकािमान तारागर्ण में सवावशधक िीप्यमान तारक हैं तथा सिव शवनयी भिवृन्द द्वारा शघरे रहते हैं, उन श्री स्वामी शिवानन्द जी महाराज की मैं वन्दना करता हाँ।

अहभनवशुभमागापन् मागपयन् मानवाना-
महभरुहिमवगच्छन् भव्ययोगाय तेषाम्
अहभनुतगुणराहशाः सवपलोकाहभवन्द्यो
जयतु सुहिरमेवं श्रीहशवानन्दयोगी ।। ९३ ।।

जो समस्त साधको ांके कल्यार्णाथव उनकी शभि-शभि अशभरुशचयो ांके अनुरूप नवीन मागों की खोज हेतु प्रशत क्षर्ण अनुसिानी हैं तथा अपने श्लाघनीय सगुर्णो ांके कारर्ण जो सववन्दनीय हैं, उन महायोगीन्द्र श्री स्वामी शिवानन्द जी महाराज की सिा जय हो।

अनुहदनमनुवेलं सूक्तिर्ीयूषवषे -
मपनुजहनकरतारं् सवपमुनू्मूलयन्तम्
अनुर्ममहिमाढ्यं हदव्यदीप्त्या हवराज-
त्तनुमक्तखलहनषेव्यं श्रीहशवानन्दमीिे ।।९४।।

मैं श्री स्वामी शिवानन्द जी महाराज की वन्दना करता हाँ जो प्रशतशिन प्रशत क्षर्ण अपने मधुरवचनामृत द्वारा साांसाररक मनुष्यो ांके िुःखो ांएवां िोषो ांका नाि करते हैं, शजनकी मशहमा अनुपमेय ह , जो शिव्य िीन्धप्त से शवभाशसत हैं तथा अन्धख शवश्व शजनकी वन्दना-आराधना करता ह।

अमलमहतमशेषान् मानुषान् भक्तियोग-
क्रममहतसरलोक्त्या हनत्यमुद्बोधयन्तम्
शमधनमनरे्तप्रश्रयं धमपरक्षा
श्रमकरमकलंकं श्रीहशवानन्दमीिे ।।९५।।

मैं श्री स्वामी शिवानन्द जी महाराज की वन्दना करता हाँ जो शनमव -मशत साधको ांको अपने सर उपिेिो ां द्वारा भन्धियोग में िीशक्षत करते हैं, जो िम एवां शवनय की सम्पिा से सम्पि हैं तथा शनिःस्वाथव रूप से धमवरक्षा के कायव में सतत सां ग्न हैं।

सकलजनशुभाथिं हदव्यगीताथपसारं
सरललहलतरीत्या हनत्यमाभाषमाणम्
सहवधगतजनानां र्ार्मुनू्मूलयन्तम्
सहवतृतुहलतदीक्तप्तं श्रीहशवानन्दमीिे ।। ९६ ।।

जो ोककल्यार्णाथव अपनी सरस-सर वार्णी में शिव्य ग्रन् श्रीमद्भगवद्गीता के सार पर शनत्य उद्बोधन िेते हैं, िरर्णापि जनो ांके पापो ांका समू नाि करते हैं तथा जो सूयव सदृि िीन्धप्तमन्त हैं, उन श्री स्वामी शिवानन्द जी महाराज की मैं आराधना करता हाँ।

अहवकलसुखमूलं ध्यानशीलं प्रकामं

भुहव हनयतमशेषैरेतदेवाजपनीयम्
सुहवशदमधुरोक्त्या तद्गुणान् बोधयन्तम्
भहवकगुणगणाढ्यं श्रीहशवानन्दमीी ।। ९७ ।।

जो ािश्वत आनन्द के स्रोत हैं, शनत्य ध्यानिी हैं, सतत प्रयत्निी हैं शक प्रत्येक मनुष्य प्रािन्त मन रूपी सम्पिा का अजवन करे, जो अपनी मधुर वार्णी में सि व ध्यान के ाभो ांका वर्णवन करते हैं तथा जो मोक्षमागवप्रिाता सन्तवृन्द में सववश्रेष्ठ हैं, उन श्री स्वामी शिवानन्द जी महाराज को मैं सािाांग प्रर्णाम करता हाँ।

हवितहवहवधतार्ं वीतनानावलेर्ं
हवहदतहनगमसारं प्राप्तवेदान्तर्ारम्
हवनतजनरीतं हवशुरुतामेयकीहतप
हवगतसकलदोषं श्रीहशवानन्दमीी ।।९८ ।।

मैं श्री स्वामी शिवानन्द जी महाराज की वन्दना करता हाँ जो समस्त प्रकार के तापो ांसे मुि हैं, शजन्ोनें अहांता एवां ममता का समू नाि कर शिया ह, जो समूपूर्णव िास्त्ो ांके ज्ञान से सम्पि हैं, परम विज्ञ हैं, भन्िभावपूर्णव शिष्यो ांसे सिव शघरे रहते हैं तथा जो अपने पावन चररत्र के श ए सुशवख्यात हैं।

हनरवहधहनजहशष्यान् मोक्षमागिं नयन्तं
हनरयर्हततलोकानुद्धरन्तं हनतान्तम्
हनरवरतमशेषक्षेमकृत्यैकदीक्षं
हनरर्मतुलशीलं श्रीहशवानन्दमीी ।।९९।।

मैं श्री स्वामी शिवानन्द जी महाराज की आराधना करता हाँ जो अपने अनेकानेक शिष्यो ांको मोक्ष का मागव शिखाते हैं, भवसागर में शनमग्न मनुष्यो ांके उद्धार हेतु सतत प्रयत्निी हैं, जो शवश्व-कल्यार्ण के कायव में अशवरत सां ग्न हैं, परम पावन हैं तथा अतु नीय िी से सम्पि हैं।

मन्दाहकन्यासुसुरुहिरतटे सुन्दरे मत्तन्दरे सद्-
वृन्दाकीणे सदहस हवलसहद्दव्यर्ीठे हनषण्णम्
मन्दस्मेराननसरहसजाहन्नगपलहद्दव्यसूक्ति-
स्यन्दस्तोमैक्तश्शहशररतजनं श्रीहशवानन्दमीी ।।१००।।

जो मनोहारी मन्दाशकनी (गङ्गा) के तट पर न्धस्थत सुन्दर कुटीर में सज्जनवृन्द से शघरे अपने शिव्य आसन पर ििायमान हैं तथा अपने शनत्य-प्रफुन्धित मुखारशवन्द से शनिःसृत मधुर वचनामृत द्वारा समस्त मनुष्यो ांके हृियो ांको िीति ता प्रिान करते हैं, उन श्री स्वामी शिवानन्द जी महाराज की मैं वन्दना करता हाँ।